



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 165]

No. 165]

नई दिल्ली, सोमवार, जून 25, 2007/आषाढ़ 4, 1929
NEW DELHI, MONDAY, JUNE 25, 2007/ASADHA 4, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जून, 2007

अंतिम जांच परिणाम

विषय :- चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नोनाइल फेनॉल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच

सं. 14/13/2005-डीजीएच।-भारत सरकार, 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिक अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारणार्थ) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

क. क्रियाविधि

2. जांच के संबंध में निम्नलिखित क्रियाविधि का अनुपालन किया गया है :

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने उपर्युक्त नियमों के तहत, घरेलू उद्योग की ओर से मै. शैनेक्टेडी हर्डीलिया लि. (जिन्हें एतदपश्चात् याचिकाकर्ता कहा गया है) द्वारा एक लिखित याचिका प्राप्त की, जिसमें चीनी ताइपेई (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) से नोनाइल फेनॉल (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और पाटनरोधी

शुरू करने और संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया है;

- (ii) याचिका की प्रारंभिक जांच करते समय उसमें कुछ कमियां पाई गई थीं जिन्हें याचिकाकर्ता द्वारा सुधार लिया गया था;
- (iii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पाटन संबंधी याचिका की प्राप्ति के विषय में भारत स्थित ताइपेई इकोनॉमिक एण्ड कल्चरल सेन्टर को अधिसूचित किया था;
- (iv) घरेलू उद्योग की ओर से याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने नियमों 6 के उप-नियम (1) के अनुसार संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए, भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 29 जून, 2006 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की है, ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जा सके, जिसे यदि लगाया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी;
- (v) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों/प्रयोक्ताओं और शिकायतकर्ता को उक्त सार्वजनिक नोटिस की प्रति अग्रेषित की और नियम 6(2) के अनुसार प्रारंभिक अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से ज्ञात करने का अवसर प्रदान किया;
- (vi) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों और ताइपेई इकोनॉमिक एण्ड

कल्चरल सेंटर को याचिका की एक प्रति उपलब्ध कराई

1. चाइना मैन-मेड फाइबर कॉर्पोरेशन
2. फॉर्मोसान यूनिन केमिकल्स कॉर्पोरेशन

इन निर्यातकों से अब तक कोई उतर प्राप्त नहीं हुआ है;

(vii) नियम 6 (2) के अनुसार जांच की शुरुआत के संबंध में भारत में स्थित ताइपेई इकोनॉमिक एण्ड कल्चरल सेंटर को इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की रूढ़ि दें। निर्यातकों के भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक-एक प्रति उन्हें भी भेजी गई थी;

(viii) नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को आवश्यक सूचना हेतु प्रश्नावली भेजी गई थी :

1. मै. माइक्रो इक्स लि.
2. मै. कृष्णा एण्टीऑक्सिडेंट प्रा. लि.
3. मै. लाफन्स पेट्रोकेमिकल्स लि.
4. मै. एस्टीम इंड. प्रा. लि.
5. मै. डाई-इची करकरिया लि.
6. मै. आईसीआई इंडिया लि.
7. मै. सी. जे. शाह एण्ड कं.
8. मै. एडवांस केमिकल्स
9. मै. स्टर्लिंग ऑक्सिलरीज प्रा. लि.
10. मै. ऑक्टेल् प्रोडक्ट्स लि.
11. मै. केमिकल कॉर्पोरेशन
12. मै. इंडिया ग्लायकॉल्स लि.
13. मै. जूबिलेन्ट ऑर्गनोसिस लि.
14. मै. गुजरात ग्लायकॉल्स प्रा. लि.
15. यूनिटॉप केमिकल्स प्रा. लि.
16. डॉर्फ केताल केमिकल्स इंडिया प्रा. लि.
17. इंडियन केमिकल मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन

चार आयातकों द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर प्रस्तुत किया गया था;

(ix) जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां फिक्की, एसोचैम, सीआईआई, एक्साइज लॉ टाइम्स आदि को व्यापक परिचालन हेतु भेजी गई थीं;

(x) यह जांच 1 अक्टूबर, 2004 से 31 दिसम्बर, 2005 (15 महीने) तक की अवधि अर्थात् जांच अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में वर्ष 2001-02, 2002-03, 2003-04, 2004-05 और जांच अवधि तक की अवधि को शामिल किया गया था;

(xi) पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराने हेतु वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से अनुरोध किया गया था;

(xii) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतर को प्राधिकारी द्वारा रखी जाने वाली एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के प्रयोजनार्थ खुला रखा;

(xiii) अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, अनुरोध पर याचिका की अगोपनीय प्रति भी उपलब्ध कराई गई थी;

(xiv) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएपी) तथा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की इष्टतम लागत और भारत में माल बनाने और बेचने की लागत का परिकलन करने के लिये लागत जांच की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क, घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा;

(xv) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 10 अप्रैल, 2007 को मौखिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि, चीन से संबद्ध वस्तु के आयातक उपस्थित हुए थे। सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित होने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों के लिखित अनुरोध प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में विचार किया है;

(xvi) इस अधिसूचना में का तात्पर्य गोपनीय आधार पर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना से है और नियमों के भीतर इसे प्राधिकारी ने भी यही माना है।

ख. विचाराधीन उत्पाद

3. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद नोनाइल फेनॉल है जिसे पैरा नोनाइल फेनॉल के नाम से भी जाना जाता है। यह एक साफ लसीला तलछट रहित तरल होता है। नोनाइल फेनॉल का रासायनिक फार्मूला एवं संरचना $C_{15}H_{24}O$ होती है। इसका उपयोग सल्फोनेशन के पश्चात् नान-आयोनिक सर्फैटेन्ट्स के रूप में प्रयोग

किए जाने के लिए एनपी-इथीलीन आक्साइड कन्डेसेट्स तेल में घुलनशील फेनॉलिक रेजिन ल्यूब्रीकेटिंग तेलों में जंगरोधक तत्व के रूप में प्रयुक्त होने वाले अवकलजों तथा कृषि रासायनिक तत्वों के संघटकों के विनिर्माण में किया जाता है। इसका उपयोग अग्निशामकों और प्लास्टिसाइजर्स में भी किया जाता है। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम तथा भारतीय व्यापार वर्गीकरण के तहत उप-शीर्ष सं. 2907.13 के अंतर्गत वर्गीकृत है। यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और जांच के कार्यक्षेत्र पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने उत्पाद के वितरण के संबंध में कोई विवाद नहीं उठाया है।

ग. समान वस्तु

4. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और सम्बद्ध देश द्वारा आयातित संबद्ध उत्पाद में कोई अंतर नहीं है। यह उत्पाद आयातकों एवं प्रयोक्ताओं द्वारा सीधे आयात किया जा रहा है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी पक्षकार ने इस दावे का खंडन नहीं किया है कि आयातित उत्पाद और याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं है। आयातित वस्तुओं को प्रयोक्ता उद्योग द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के साथ अदल-बदल कर उपयोग में लाया जा रहा है। अतः घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद और संबद्ध देशों द्वारा आयातित उत्पाद सभी मूल लक्षणों में समान हैं और इसलिए नियमों के अर्थों के भीतर समान वस्तुएं हैं। वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित उत्पाद को उपर्युक्त नियमों के अर्थों के भीतर संबद्ध देश से आयातित उत्पाद के समान उत्पाद माना गया है।

घ. घरेलू उद्योग

5. याचिका, मै. शेनकेटेडी हर्डीलिया लि., द्वारा दायर की गई है, जो भारत में संबद्ध उत्पाद का एकमात्र उत्पादक है। प्राधिकारी ने नोट किया है कि पूर्वोक्त उत्पादक के उत्पादन का घरेलू उत्पाद के कुल घरेलू उत्पादन में 100 प्रतिशत हिस्सा है। अतः प्राधिकारी निर्धारित करते हैं कि पूर्वोक्त याचिकाकर्ता नियम 5(3)(क) के संदर्भ में घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने के लिए मानदंडों को पूरा करता है और उपर्युक्त नियमों के नियम 2(ख) के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करता है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा ऐसा तर्क नहीं दिया गया है कि याचिकाकर्ता निर्धारित नियमों के अनुसार मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं।

ङ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

6. सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम, 1995 की धारा 9क(1)(ग) के अधीन किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

“(i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या

(ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो—

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत”।

ड 1 सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

ड 1.1 हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत यह जांच प्रक्रिया उन उत्पादों के लिए शुरू की जानी तथा चलाई जानी चाहिए जिनका पाटन हुआ हो तथा जो घरेलू विनिर्माताओं को वास्तविक क्षति पहुंचा रहे हों तथा जो नियम 5(3) के अंतर्गत यथा अधिदेशित पाटन और जहां लागू हो क्षति और कारणात्मक संबंध के पर्याप्त साक्ष्यों द्वारा समर्थित हों। परन्तु अगोपनीय अंश में सामान्य मूल्य की गणना संबंधी साक्ष्य अधूरे हैं क्योंकि (क) चीनी टाइपेई के लिए सामान्य मूल्य की गणना हेतु पद्धति एवं साक्ष्य, (ख) निर्यात कीमत में किए गए समायोजनों, (ग) पाटन मार्जिन की गणना, (घ) निर्णायक मापदंडों संबंधी सूचना का प्रकटन नहीं किया गया है। उन्होंने अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत विवरण वास्तविक रिकार्ड एवं दस्तावेजों द्वारा अवश्य समर्थित होने चाहिए और ऐसा नहीं करना काफी बड़ी गलती थी क्योंकि इससे प्राधिकारी द्वारा मामले की सत्यता एवं तथ्यपूर्णता की वस्तुनिष्ठ जांच करने में बाधा पहुंची थी। इस प्रकार जांच प्रक्रिया समाप्त की जानी चाहिए। इसके अलावा किसी जांच में गोपनीय सूचना प्रदान करने वाले किसी पक्षकार को नियमावली के नियम 7 के अनुसार सार्थक अगोपनीय सारांश या सारांश प्रस्तुत नहीं किए जाने के कारण प्रस्तुत करने चाहिए। याचिकाकर्ताओं ने सामान्य मूल्य की गणना संबंधी महत्वपूर्ण सूचना को गोपनीय रखा है और न तो इसका अगोपनीय अंश प्रस्तुत किया है और न ही अपेक्षित गोपनीय व्यवहार हेतु कारण या सारांश क्यों नहीं किया जा सकता इसके कारण प्रस्तुत किए हैं। इससे औद्योगिक प्रयोक्ताओं को इस जांच के संबंध में अपने अनुरोध करने के अधिकार में अत्यधिक बाधा हुई है। गोपनीय सूचना के मूल्यांकन हेतु किसी मापदंड अर्थात्: (i) गोपनीय प्रकृति या (ii) किसी उचित कारण से उन्हें गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया हो—को पाटनरोधी करार और नियमावली में वर्णित सिद्धांतों के विरुद्ध नहीं पाया गया है।

ड 1.2 घरेलू उद्योग का उत्तर

8. आवेदक ने सामान्य मूल्य की गणना की पद्धति और साक्ष्य के बारे में सभी संगत ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। सामान्य मूल्य के परिकलन में आवेदक की लागत निर्धारण संबंधी सूचना का उपयोग किया गया है जो गोपनीय प्रकृति की है तथा यहां तक कि सूचीबद्ध सूचना से भी अन्य पक्षकारों को प्रतिस्पर्धी लाभ मिलता है। प्राधिकारी द्वारा इस सूचना को गोपनीय रखने की अनुमति दी गई है। आवेदक ने निर्यात कीमत में किए गए समायोजनों के संबंध में सभी ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। संपूर्ण सूचना वास्तविक संख्याओं या सूचीबद्ध ढंग से दी गई है।

ड 2 प्राधिकारी द्वारा जांच

9. प्राधिकारी ने इन अनुरोधों को इनकी संगतता और तथ्यात्मकता की सीमा तक संज्ञान में रखा है और उठाए गए मुद्दों की इन परिणामों के उचित खंडों में जांच की गई है। प्राधिकारी ने इस बात से संतुष्ट होने के बाद ही कि आवेदक द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य प्रथम दृष्टया पर्याप्त और सही है, कार्रवाई शुरू की थी। यह नोट किया गया था कि चीनी ताइपेई से किसी भी निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण खपत संबंधी मानदंडों के अनुसार कच्ची सामग्री की लागत और घरेलू उद्योग द्वारा इसके लिए प्रदत्त शुल्क मुक्त आयात की दरें रसायनों उपयोगिताओं वेतन तथा भत्तों भंडारण आदि के लिए घरेलू उद्योग के वास्तविक व्यय के अनुसार परिवर्ती तथा अन्य लागत, निर्यात हेतु घरेलू उद्योग के वास्तविक व्यय के अनुसार बिक्री सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय, मूल्य ह्रास तथा ब्याज और उत्पादन लागत के 5 प्रतिशत की दर से लाभ को हिसाब लेकर उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया है। इस प्रकार परिकलित सामान्य मूल्य ***अम. डा./मी. टन बनता है। निर्यात कीमत का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मालभाड़े और बीमा आदि के लिए समायोजनों के बाद डीजीसीआई एंड एस के आकड़ों और एक एक प्रतिशत के प्रभारों तथा कमीशन के अनुसार सीआईएफ आयात कीमत के आधार पर किया गया है। निवल कारखाना द्वारा निर्यात कीमत ***अम.डा./मी.टन बनती है। तदनुसार चीनी ताइपेई के सभी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन ***अम.डा./मी.टन (14 प्रतिशत) बनता है।

च. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के जांच

च. 1 घरेलू उद्योग के विचार

10. आवेदक ने दावा किया है कि :

- * क्षति जांच अवधि के दौरान चीनी ताइपेई से आयातों की मात्रा में 24 गुना वृद्धि हुई है।
- * जांच अवधि के दौरान कुल आयात, कुल मांग और घरेलू उत्पादन के प्रतिशत रूप में चीनी ताइपेई से आयातों का हिस्सा बढ़कर क्रमशः 98 प्रतिशत, 37 प्रतिशत और 24 प्रतिशत हो गया है।
- * क्षति अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में वृद्धि का लाभ लागत में हुई वृद्धि के कारण शून्य हो गया है। तथापि

इससे तुरन्त पिछले वर्ष की तुलना में बिक्री कीमतों में वृद्धि इसी अवधि के दौरान लागत में हुई वृद्धि से काफी कम है।

- * चीनी ताइपेई से पाटित आयातों से घरेलू वस्तुओं की कीमत और बिक्री में काफी कमी आई है।
- * क्षति अवधि के दौरान घरेलू बिक्रियों की मात्रा में 38 प्रतिशत तक की कमी आई है।
- * घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा आधार वर्ष में 98 प्रतिशत के उच्च स्तर से घटकर क्षति अवधि में 60 प्रतिशत तक पहुंच गया है।
- * जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता ऋणात्मक रही है। पिछले वर्ष की तुलना में लाभप्रदता में 12.20 प्रतिशत की गिरावट आई है।
- * क्षति जांच अवधि के दौरान आरओसीई और नकद लाभ में गिरावट आई है।
- * क्षति जांच अवधि के दौरान बिक्री के प्रतिशत रूप में भी औसत भंडार (दिनों की संख्या) में वृद्धि हुई है।
- * जांच अवधि में पाटन मार्जिन काफी अधिक रहा है।

च. 2 हितबद्ध पक्षकारों के विचार

11. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आवेदकों ने दावा किया है कि वे जांच की एक ही अवधि या वस्तुतः अतिव्यापी अवधियों के दौरान उनके सभी उत्पादों के पाटन से प्रभावित हुए हैं। चूंकि फेनोल विचाराधीन उत्पाद में प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण निवर्षित है इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को आंतरिक रूप से फेनोल की अंतरण कीमत की लागत और कीमत निर्धारण में पाटित फेनोल की भूमिका और संबद्ध उत्पाद की परिणामी क्षति की जांच करनी चाहिए।

12. उन्होंने यह अनुरोध किया है कि 1 जुलाई, 2004 से 30 जून, 2005 तक की अवधि के दौरान संबद्ध उत्पाद के चीनी उत्पादकों ने ताइवान और भारत से निर्यातित नोनाइल फेनॉल के विरुद्ध पाटन-रोधी जांच शुरू की थी, जो अवधि भारत में जांच अवधि को अतिव्याप्त करती है। चीनी प्राधिकारियों ने 28 मार्च, 2007 को अंतिम निर्धारण किया और आवेदक के लिए पाटन मार्जिन 12.22% था फोरमोसा यूनियन कैमिकल कार्पोरेशन (ताइवान) के लिए ये 6.87% था और चाइना मैन मेड फाइबर कार्पोरेशन (ताइवान) के लिए मार्जिन 4.08% था। सभी अन्य निर्यातकों को प्राप्त मार्जिन 20.38% था। उन्होंने आगे तर्क दिया है कि चूंकि संबद्ध देश से किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है, इसलिए जांचकर्ता प्राधिकारी वर्ष 2000 में डीए बनाम हान्डोर टोप्सो मामले में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार "सर्वोत्तम निर्णय आकलन" के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण कर सकते हैं। ताइवान से चीन जन. गण. को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य संबंधी सूचना सार्वजनिक रूप में थी और इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य इस बात पर विचार करते हुए सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना होगी कि डब्ल्यूटीओ के एक सदस्य देश ने उसी उत्पाद, उसी संबद्ध देश और अतिव्यापी जांच

अवधि (9 माह) में इस मामले की जाँच की थी। इन आंकड़ों की प्राधिकारी के अपने मानदंडों के अनुपालन हेतु जाँच की जा सकती है और उन पहलुओं पर इसे प्रभावी किया जा सकता है जिनसे निष्पक्ष आकलन संभव हो सके। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कोई भी पद्धति अपनायी गई हो, पाटन मार्जिन याचिकाकर्ता द्वारा दावा किए गए स्तर से कम होगा।

13. उन्होंने बताया है कि तुलन-पत्र से यह स्पष्ट था कि आवेदक एक बहु-उत्पाद कम्पनी था जो भारत में नवी मुम्बई, रसाल और लोट में तीन इकाइयों का प्रचालन कर रहा था लेकिन इन संयंत्रों में संबद्ध उत्पाद का संयंत्र शामिल नहीं था। जैसा कि जाँच अवधि के दौरान आवेदक को अपने संयंत्रों में प्राकृतिक आपदाओं के कारण नुकसान हुआ था और उसने जुलाई, 2005 में बाढ़ के कारण बीमा के रूप में लाभ में घाटे का दावा किया था इससे यह साबित होना चाहिए कि वे दो बार इस बीमे से लाभान्वित नहीं हुए हैं और अब वे क्षति हेतु क्षतिपूर्ति की माँग नहीं कर रहे हैं जिसकी पहले ही क्षतिपूर्ति हो चुकी है। इसके अलावा आवेदक को यह प्रदर्शित करना चाहिए कि जिस क्षति का दावा किया गया है वह वास्तव में नोनाइल फेनोल के व्यावसायिक प्रचालनों के कारण हुई थी और न कि अनुसंगी प्रचालनों के कारण।

14. उन्होंने तर्क दिया है कि आवेदक द्वारा प्रस्तुत क्षति संबंधी आँकड़ों के विश्लेषण से यह पता चला है कि पाटन के कारण घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हो रही है जैसाकि बताया गया है।

(क) स्थापित क्षमता में वर्ष 2001-2002 में 21100 मी. टन से वर्ष 2003-2004 के दौरान 24000 मी. टन तक की जबरदस्त वृद्धि हुई है और इसके बाद 10% से अधिक की समग्र वृद्धि हुई है।

(ख) उत्पादन में वर्ष 2001-2002 में 13010 मी. टन से वार्षिकीकृत जाँच अवधि के दौरान 19102 मी. टन तक की जबरदस्त वृद्धि 46% की समग्र वृद्धि हुई है।

(ग) यद्यपि घरेलू बिक्रियों में वर्ष 2001-2002 में 7880 मी. टन से वार्षिकीकृत जाँच अवधि के दौरान 4929 मी. टन तक की मामूली गिरावट आई है तथापि अंतिम स्टाक भी सर्वकालिक निम्न स्तर 204 मी. टन पर रहे हैं, जिसका अर्थ यह है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात बाजारों में अधिक बिक्रियों की गई हैं जिनके व्यौरों का खुलासा नहीं किया गया है। इस प्रकार अभिज्ञात किए गए सभी सकारात्मक संकेतकों से आवेदक के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

तदनुसार, किए गए क्षति विश्लेषण से इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं कि क्षति के निर्णायक एवं महत्वपूर्ण मापदंडों के आधार पर आवेदक को कथित पाटित आयातों के कारण "वास्तविक क्षति" नहीं हुई है।

15. प्रस्तुत की गई सूचीबद्ध सूचना के आधार पर उन्होंने अनुरोध किया है कि :-

(i) वर्ष 2002-2003 के लिए सूचीबद्ध घरेलू कीमतों में 15% से अधिक की गिरावट आई है जबकि सूचीबद्ध लाभ प्रदत्ता में 17% की कमी हुई है—एक स्पष्ट उल्टी गई क्षति का मामला है।

(ii) वर्ष 2003-2004 में, यद्यपि आयातों की पहुँच लागत बढ़कर 111.6 (सूचीबद्ध) हो गई, तथापि घरेलू कीमत पिछले वर्ष 86.46 (सूचीबद्ध) के समान स्तर 86.56 (सूचीबद्ध) पर रही, और इससे लाभ प्रदत्ता में 4.25 गुना (सूचीबद्ध) की वृद्धि हुई है।

(iii) वर्ष 2004-05 (अप्रैल-सितम्बर, 2004) में, आयातों की पहुँच लागत/बढ़कर 130.6 (सूचीबद्ध) हो गई और घरेलू कीमत बढ़कर 104 (सूचीबद्ध) हो गई तथा इसके परिणामस्वरूप सूचीबद्ध लाभप्रदता में 7.31 गुना (सूचीबद्ध) की वृद्धि हुई है।

(iv) जाँच अवधि के दौरान कीमत-प्रकृति जिसमें घरेलू कीमतें घटकर 88.14 (सूचीबद्ध) के स्तर पर पहुँच गईं जो वर्ष 2003-04 की घरेलू कीमतों अर्थात् 86.56 (सूचीबद्ध) से कोई अधिक था। यद्यपि आयातों की सीआईएफ कीमत अप्रैल-सितम्बर, 2004 और अक्टूबर, 2004-दिसम्बर, 2005 (क्रमशः 58.47 रु./किग्रा. और 58.07 रु./किग्रा.) में समान रही थी, तथापि उद्योग ने अचानक (-103%) की नकारात्मक लाभप्रदता (सूचीबद्ध) दर्शाई है। आयातों की पहुँच लागत में कटौती को उक्त अवधि हेतु आयात शुल्क में कटौती के आधार पर न्यायोचित ठहराया गया है।

(v) वर्ष 2003-04 और जाँच अवधि के दौरान, सूचीबद्ध घरेलू कीमतों कमोबेश समान रही हैं जबकि लाभप्रदता जो 425 (सूचीबद्ध) मी में (-82) कमी आई है। इसके अलावा, जैसाकि बताया गया है जाँच अवधि के दौरान नोनीन और फेनोल की कच्ची सामग्रियों में वृद्धि के बाद भी बिक्रियों की लागत 2001-2002 के दौरान 100 (सूचीबद्ध) से जाँच अवधि (वार्षिकीकृत) के दौरान 88 (सूचीबद्ध) रह गई है।

ये सभी कारक यह संकेत करते हैं कि ऐसा कतिपय बाह्य कारकों के कारण है या एक बहु-उत्पाद कम्पनी होने के कारण घाटों को संबद्ध वस्तुओं पर डाल दिया गया है। कथित पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

ख. 3 घरेलू उद्योग का उत्तर

16. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि अन्य जाँचें स्वतंत्र हैं और वर्तमान जाँच से संबंधित नहीं हैं क्योंकि विचाराधीन उत्पाद बिल्कुल अलग है। इसके अलावा पाटनशील प्रवधानों के अंतर्गत इस तथ्य की कोई

प्रसंगिकता नहीं है कि जांच अवधि का कुछ हिस्सा परस्पर अतिव्यापी है। नोनाइल फेनोल के कीमत निर्धारण में पाटित फेनोल की अंतरण कीमत की लागत और उसकी भूमिका के संबंध में दिए गए तर्क से उनका मामला तभी मजबूत होता है जब किसी समय फेनोल की कीमतों में वृद्धि से कीमत निर्धारण और लागतों पर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़े।

17. उद्योग ने यह बताया है कि स्वयं आवेदक के चीन में पाटनरोधी मामले का सामना करने के मुद्दे का कोई परिणाम नहीं निकला क्योंकि समूची पाटनरोधी जांच तार्किक रूप से तथा विधिक रूप से केवल घरेलू बाजार में "उद्योग की स्थिति" से संबंधित है। भारतीय निर्यातकों को चीनी बाजार में इन्हीं ताईवानी निर्यातकों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। ताईवान के किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है जिसका अर्थ उनके द्वारा भारत में अत्यधिक पाटन की मूक स्वीकृति माना जा सकता है विशेषकर तब जब ताईवान के इन्हीं निर्यातकों ने चीनी जांच में पूरा सहयोग किया है। इसके अलावा, चीनी प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित सामान्य मूल्य सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है और स्वीकृत प्रथा के अनुसार गोपनीय रखा गया है। इसके अतिरिक्त, चीन के प्रकरण में जांच की अवधि जुलाई, 2004-जून, 2005 थी, जबकि इस मामले में यह अक्टूबर, 2004 से दिसंबर, 2005 थी। यह सुझाव देने के लिए कोई न्यायशास्त्र नहीं था कि प्राधिकारी को दूसरे देशों के प्राधिकारियों द्वारा उनके अपने राष्ट्रीय कानूनों के तहत किए गए निर्धारणों को (बिना जांच के) स्वीकार करना चाहिए। चीनी प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित सामान्य मूल्य (यदि उपलब्ध हो, तब भी) पर जांच अवधि में अत्यधिक भिन्नता तथा निविष्टि की कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव के कारण निर्भर नहीं रहा जा सकता।

18. उद्योग ने यह बताया है कि रसल (ओ कि नोनाइल फिनाइल के लिए था) में उत्पादन सुविधा बाढ़ द्वारा प्रभावित नहीं हुई थी और इसीलिए यह बीमा के दावे का लाभानुभोगी नहीं था। दी गई क्षति संबंधी जानकारी केवल घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं के संबंध में थी न कि निर्यात कार्यकलाप अथवा अन्य उत्पादों के लिए।

19. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा क्षति के बारे में लगाए गए अनुमानों पर घरेलू उद्योग ने बताया है कि क्षमता, नोनाइल फिनाइल डोडिसील फिनाइल के लिए साझा सुविधा थी तथा उपलब्ध क्षमता, संयंत्र में कोई परिवर्तन किए बिना दोनों उत्पादों के लिए एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त की जा सकती थी। उत्पादन संबंधी आंकड़े दोनों उत्पादों के लिए थे तथा इनमें निर्यात उत्पादन शामिल था। इसलिए, इन आंकड़ों पर आधारित कोई निष्कर्ष अनुपयुक्त होगा। साथ ही, चूंकि क्षमता दोनों उत्पादों के लिए थी, इसलिए इसे क्षमता का अतिरिक्त नहीं कहा जा सकता था। आयातक ने अतिरिक्त क्षमता के बारे में तर्क करते समय संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उत्पादन को लिया था किन्तु दोनों बाजारों में दोनों उत्पादों के लिए कुल उत्पादन पर गौर करते हुए जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 80% था। यदि आवेदक के पास घरेलू एनपी के लिए पृथक् से अनन्य सुविधा होती तो उनकी क्षति की

स्थिति और ज्यादा खराब हुई होती। जहां तक स्टॉक का संबंध है, दिनों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक, जांच अवधि की तुलना में दुगुने से अधिक था।

20. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निकाले गए दूसरे निष्कर्षों पर घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि आयातक ने लाभप्रदता, पहुंच, मूल्य, सीआईएफ कीमतें तथा लागत से जुड़ा अपना विश्लेषण गलत तरीके से बिक्री मूल्य (लाख रु.)-घरेलू बिक्री कीमतों के रूप में सूचीबद्ध को लेकर किया है। ऐसा विश्लेषण गलत होगा तथा गलत अभिकथनों से निकाले गए निष्कर्षों की उपेक्षा करनी अपेक्षित है। घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में 37% के बराबर की गिरावट आयी है जिसका काफी होना स्पष्टतः क्षति को दर्शाता है। इसके अलावा, जब जांच अवधि में, इसके तुरंत बाद की अवधि की तुलना में कच्चे माल की लागत में अत्यधिक वृद्धि हुई है, सीआईएफ कीमतों में अपरिवर्तन यह इंगित करता है कि निर्यातक ने अपनी निर्यात कीमतों में कमी की जिससे घरेलू कीमतों की कीमत कटती हो रही है, फलस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

च. 4. प्राधिकारी द्वारा जांच

21. पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 के अनुसार :

"क्षति का निर्धारण :

(1) विनिर्दिष्ट देशों से आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी एक और जांच परिणाम का अभिलेख रखेगा कि भारत में ऐसी वस्तुओं के आयात से किसी स्थापित उद्योग को वास्तविक क्षति होती है अथवा इसका जोखिम होता है या भारत में किसी उद्योग की स्थापना में बाधा आती है;

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसे वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परवर्ती प्रभाव सहित सभी प्रसंगिक तथ्यों पर गौर करते हुए और इस नियमावली के अनुबंध-II में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग को क्षति का खतरा, घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा पाटित आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण करेगा।"

22. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में उल्लिखित क्षति के सिद्धांतों के अनुसार :

क. क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों पर परवर्ती प्रभाव, दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी।

ख. पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय, उक्त प्राधिकारी इस बात पर गौर करेगा कि क्या निरपेक्षतः अथवा भारत में उत्पादन या खपत के सापेक्ष, पाटित आयातों में कोई उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। नियम 18 के उप-नियम (2) में उल्लिखित कीमतों

पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा अत्यधिक कटौती होगी अथवा कीमत में वृद्धि रुकेगी जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

23. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ संबंध देशों से पाटित आयातों की जांच की गई है ताकि घरेलू उद्योग पर इन आयातों की मात्रा एवं कीमत संबंधी प्रभाव और कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव का पता लगाया जा सके और क्षति की मौजूदगी तथा पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच की जा सके। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों और आवेदक के उत्तर को आवश्यकतानुसार ध्यान में रखा गया है। इससे जांच के प्रयोजनार्थ आवेदक घरेलू उद्योग है। प्राधिकारी ने चीन जन. गण. में आवेदक के खिलाफ बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास से प्राप्त पाटनरोधी कार्रवाई की प्रति की जांच भी की थी किन्तु इसमें चीन के प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य का कोई ब्यौरा निहित नहीं था।

ख. 5. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

24. संबंध देशों से पाटित आयातों तथा अन्य देशों से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

I. आयात की मात्रा और संबंध देशों का हिस्सा

25. क्षति जांच के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस के आयात संबंधी आंकड़ों और घरेलू उद्योग द्वारा अन्य गौण स्रोतों से उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2004-05 और जांच अवधि के लिए डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों में सूचित मात्रा और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के बीच मामूली अंतर है क्योंकि उद्योग ने आईबीआईएस के आंकड़ों पर आंशिक रूप से विश्वास किया है। तथापि, क्षति जांच हेतु डीजीसीआईएस के आयात संबंधी आंकड़ों को अपनाया गया है इन आंकड़ों के आधार पर संबंध देशों की आयात मात्रा निम्नानुसार है :

डीजीसीआईएस के अनुसार नोनाइल फिनाल का आयात

आयात	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
कुल					
मात्रा (मी. टन)	142.43	93.58	975.22	1613.78	2885.74
मूल्य (लाख रु.)	59.33	38.46	488.64	989.56	1718.84
कीमत/मी. टन	41658	41099	50106	61319	59563
चीनी ताइपेई से					
मात्रा (मी. टन)	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44
मूल्य (लाख रु.)	54.61	34.60	483.56	987.05	1712.94
कीमत/मी. टन	40331	39038	49935	61279	59509
अन्य देशों से					
मात्रा (मी. टन)	7.03	4.96	6.84	3.04	7.30
मूल्य (लाख रु.)	4.72	3.86	5.09	2.51	5.90
कीमत/मी. टन	67208	77962	74389	82458	80854

26. प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबंध देश से आयातों की मात्रा में आधार वर्ष की तुलना में आश्चर्यजनक ढंग से 20 गुना से अधिक वृद्धि हुई है जबकि अन्य देशों अर्थात् नीदरलैंड, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, पोलैंड और जापान से हुए आयात नगण्य पाए गए हैं। प्रति-जांच के रूप में ताइवान सीमाशुल्क महानिदेशालय द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर वर्ल्ड ट्रेड एटलस के निर्यात संबंधी आंकड़ों की भी जांच की गई थी। प्राधिकारी ने नोट किया कि चीनी

ताइपेई, विभिन्न अन्य देशों जिनमें चीन, हांगकांग, दक्षिण कोरिया और मलेशिया प्रमुख हैं, को संबंध उत्पाद और उसके आइसोमर का निर्यात करता है। जापान, ईरान और आस्ट्रेलिया को कम मात्रा में निर्यात किए गए हैं। वर्ष 2001 में भारत को हुए मात्र 30 मी. टन के कुल निर्यात आश्चर्यजनक ढंग से बढ़कर वर्ष 2005 में 4000 मी. टन से अधिक के हो गए जिनका हिस्सा चीनी ताइपेई के कुल निर्यातों का 11-13% रहा।

नोनाइल फिनाल तथा इसके समावयवों का ताईवान का निर्यात (जन.-दिस.)

(मी. टन में)

देश	2001	2002	2003	2004	2005
चीन			2185	5786	4566
कुल निर्यात में % हिस्सा		7954	8.60	18.67	14.33
हांगकांग	6068	5995	7467	6811	6126
% हिस्सा	25.28	26.00	29.39	21.98	19.22
भारत	30	711	1799	2262	4138
% हिस्सा	0.13	3.08	7.08	7.30	12.98
जापान	2972	2583	919	1772	3043
% हिस्सा	12.38	11.20	3.62	5.72	9.55
दक्षिण कोरिया	7805	7954	6735	8295	6093
% हिस्सा	32.52	34.50	26.51	26.77	19.12
मलेशिया	274	397	3163	2590	5166
% हिस्सा	1.14	1.72	12.45	8.36	16.21

स्रोत : वर्ल्ड ट्रेड एटलस

27. प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि आंकड़ों के स्रोतों में शामिल अलग-अलग अवधियों को ध्यान में रखते हुए निर्यात आंकड़ों के दोनों सेट एकदम तुलनीय नहीं हैं, डब्ल्यूटीए ने कलेंडर वर्ष को शामिल किया है जबकि डीजीसीआईएस वित्त वर्ष-वार के

आंकड़े प्रकाशित करता है। उत्पाद के आइसोमर क्या हैं, इसका भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। किन्तु आंकड़ों में विसंगति की सीमा त्रुटिरहित है, जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :

डब्ल्यूटीए के अनुसार उत्पाद निर्यात तथा डीजीसीआईएस के अनुसार आयात

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	आय अवधि
डब्ल्यूटीए	30.40	710.63	1798.54	2262.08	4138.14
डीजीसीआईएस	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44

*: जनवरी से दिसम्बर के लिए और इसमें संबद्ध वस्तु के आइसोमर शामिल हैं।

28. कीमत उतार-चढ़ाव का विश्लेषण करते समय प्राधिकारी ने यह पाया है कि चीनी ताईपेई की औसत विश्व कीमत की तुलना में भारत के लिए कीमत वर्ष 2004 से लगातार कम रही थी। वर्ष 2005 में अन्य देशों के लिए निर्यात कीमत 41 डॉलर प्रति कि.ग्रा. या उससे अधिक रही थी जबकि भारत के लिए यह आंकड़ा 37.78 डॉलर

का था। इसके अलावा, औसत कीमत की प्रवृत्ति संबंधी विश्लेषण से पता चलता है कि वर्ष 2001 और 2005 के बीच भारत के लिए कीमत में केवल 31% की वृद्धि हुई जबकि इसी अवधि के दौरान विश्व कीमतों में 57% की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी ने नोट किया कि किसी भी अन्य देश में उतार-चढ़ाव इतना नहीं रहा है।

औसत कीमत/कि.ग्रा. (ताईवानी डालर में)

देश	2001	2002	2003	2004	2005
वैश्विक कीमत	26.36	25.66	32.10	41.19	41.44
सूचीबद्ध	100	97	122	156	157
चीन			32.43	41.30	40.72
हांगकांग	26.97	26.53	32.60	43.60	40.82
सूचीबद्ध	100	98	121	162	151
भारत	28.75	25.71	32.22	38.20	37.78
सूचीबद्ध	100	89	112	133	131
जापान	25.59	25.28	32.81	44.23	44.17
सूचीबद्ध	100	99	128	173	173
दक्षिणी कोरिया	27.02	25.22	32.05	40.98	41.23
सूचीबद्ध	100	93	119	152	153
मलेशिया	29.53	28.47	31.67	37.96	43.62
सूचीबद्ध	100	96	107	129	148

स्रोत: वर्ल्ड ट्रेड एटलस

29. उपर्युक्त के होते हुए भी निम्नलिखित विश्लेषण में प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस के आंकड़ों, जो सौदे-वार उपलब्ध हैं

पर इसलिए विश्वास किया है क्योंकि वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों के विपरीत इसके आंकड़े सौदे-वार उपलब्ध हैं जिनमें ;

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिक)
कुल आयात	142.43	93.58	975.22	1613.78	2885.78
सूचीबद्ध	100	66	685	1133	2026
चीनी ताइपेई	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44
सूचीबद्ध	100	65	715	1190	2126
अन्य	7.03	4.96	6.84	3.04	7.34
सूचीबद्ध	100	70	97	43	104
घरेलू मांग	***	***	***	***	***
घरेलू उत्पादन	***	***	***	***	***
चीनी ताइपेई से आयातों का प्रतिशत हिस्सा					
कुल आयात	95.06	94.71	99.30	99.81	99.75
घरेलू मांग (सूचीबद्ध)	100	72	848	1265	2185
घरेलू उत्पादन (सूचीबद्ध)	100	59	476	610	1415

स्रोत: डीजीसीआईएस, घरेलू उद्योग

30. प्राधिकारी ने नोट किया है कि वर्ष 2001-02 में संबद्ध देश से आयातों का हिस्सा कुल आयातों का 95% था और यह वर्ष 2003-04 के बाद 99% से अधिक हो गया था जबकि अन्य देशों अर्थात् यूरोपीय संघ के देशों तथा जापान से आयातों के हिस्से में गिरावट आ रही है जो जांच अवधि के दौरान कुल आयात का मात्र 0.25% रहा है। पाटित आयातों में न केवल समग्र वृद्धि हुई है बल्कि

कुल आयातों, घरेलू मांग और भारत में घरेलू उत्पादन की तुलना में भी वृद्धि हुई है। कुल मांग के % के रूप में पाटित आयात 2001-02 में ***% से बढ़कर जांच अवधि ***% हो गए और इस प्रकार घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कटौती हुई। घरेलू उत्पादन की तुलना में भी पाटित आयात 2000-02 में ***% से बढ़कर जांच अवधि में ***% हो गए।

च. 6. पाटित आयातों की कीमत संबंधी प्रभाव

31. संबद्ध देश/क्षेत्र से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर प्रभाव की जांच, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देश से हुए आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

रु./मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
पहुंच मूल्य	54851	51140	62502	74148	69031
प्रवृत्ति	100	93	114	135	126
घरेलू बिक्री कीमत	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	95	118	137	141
कीमत कटौती	***	***	***	***	***
कटौती %	(7-12)%	(5-15)%	(3-8)%	(5-15)%	2-7%

स्रोत : घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस, संगणनाएं।

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि 2001-02 से 2004-05 की अवधि के दौरान कीमत कटौती ऋणात्मक रही है क्योंकि इस अवधि के दौरान सीमाशुल्क में 35% से लेकर 15% तक की उत्तरोत्तर कमी के बावजूद पहुंच कीमत हमेशा घरेलू बिक्री कीमत से अधिक रही है। इससे अलावा, आधार वर्ष की कीमत की तुलना में पहुंच कीमत में वृद्धि 26% हुई है जबकि क्षति अवधि की तुलना में घरेलू बिक्री कीमत में 41% की वृद्धि हुई है। तथापि, जांच अवधि के दौरान लगभग 2-7% की सकारात्मक कीमत कटौती हुई थी।

क. कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

32. संबद्ध देश से पाटित आयातों की कीमत कटौती के प्रभाव का निर्धारण समूची जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करके किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना संबद्ध देश से आयातों के सीआईएफ मूल्य में 1% प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क जोड़कर की गई है।

34. यह भी देखा गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत (एनएसआर) में आधार वर्ष की तुलना में अत्यधिक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। बिक्री लागत में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 38% की और एनएसआर में 41% की वृद्धि हुई है जिसका अर्थ यह है कि लागत में हुई वृद्धि को क्षति अवधि के दौरान उपभोक्ता को हस्तांतरित किया जा सकता है। सीमाशुल्क में कमी के बावजूद पहुंच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में 35% की वृद्धि हुई और इसमें वर्ष 2004-05 की तुलना में पीओआई के दौरान 9% की कमी आयी।

रु./मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिक)
बिक्री की लागत	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	91	101	118	138
घरेलू बिक्री कीमत	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	95	118	137	141
पहुंच मूल्य	54851	51140	62502	74148	69031
प्रवृत्ति	100	93	114	135	126

स्रोत : घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस

35. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण करने में घरेलू उद्योग द्वारा दी गई छूटों, कटौतियों और कमीशनों और भुगतान किए गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को निकाल दिया गया है। कम कीमत

पर बिक्री के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमतों की पीओआई के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित बिक्री कीमत के साथ तुलना की गई है।

रु. मी. टन में	
क्षति रहित कीमत	***
पहुंच मूल्य	69031
कम कीमत पर बिक्री	***
कम कीमत पर बिक्री %	7-12%

स्रोत : डीजीसीआईएस, गणनाएं

पीओआई में कम कीमत पर बिक्री कीमत कटौती से अधिक है।

ख. पाटित आयातों का कीमत न्यूनीकरण एवं मंदीकरण संबंधी प्रभाव :

36. पाटित आयातों के कीमत मंदीकरण संबंधी प्रभावों की भी जांच की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग अपनी पूरी

लागत जो संभवतः बाजार हिस्सा गंवाने के डर के कारण थी, वसूल करने के लिए पीओआई में एक लाभकारी कीमत वसूल नहीं कर सका था जिससे पता चलता है कि घरेलू उद्योग को अपना बाजार बनाए रखने के लिए अपनी कीमतों कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा है। वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में 20% और बिक्री कीमत में 4% की वृद्धि हुई है।

घ. 7 घरेलू उद्योग के निष्पादन संबंधी मानदंडों पर पाटित आयातों का प्रभाव

37. घरेलू उद्योग की मात्रा एवं कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के पश्चात् प्राधिकारी द्वारा उन आर्थिक मानदंडों जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का संकेत मिल सकता था, का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है :

बिक्रियों में गिरावट :

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू बिक्रियां	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	91	73	75	62
घरेलू मांग	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	90	84	94	97
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	87	80	64
निर्यात	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	791	2414	4351	3286

स्रोत : घरेलू उद्योग, गणनाएं

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा वर्ष 2001-02 में ***% से कम होकर पीओआई के दौरान ***% हो गया था जिसमें 35% की गिरावट आयी जबकि इसी समय चीनी ताइपेई से आयात इसी अवधि की तुलना में ***% से बढ़ कर ***% हो गए। आवेदक एकमात्र उत्पादक होने के कारण और अन्य उत्पादन एवं क्षमता उपयोग :

देशों का घरेलू बाजार में बहुत मामूली हिस्सा होने के कारण निहितार्थ यह है कि संबद्ध देश से आयातों ने घरेलू उद्योग को बाहर कर दिया है। मांग में वर्ष 2001-02 की तुलना में पीओआई तत्काल गिरावट प्रदर्शित हुई है लेकिन वर्ष 2004-05 से प्रतिलाभ की प्रवृत्ति स्पष्ट है।

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षमता*	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	114	114	114
उत्पादन*	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	98	128	167	147
क्षमता उपयोग %	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	98	113	147	129

*इसमें एक ही संयंत्र में उत्पादित नोनाइल फिनाइल एवं डोडेसिल फिनाइल जिनकी क्षमता को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है, शामिल हैं।

39. क्षमता में वर्ष 2003-04 में 14% की वृद्धि की गई थी तब भी क्षमता उपयोग में वृद्धि के बावजूद 29% की वृद्धि हुई है। उत्पादन मात्रा में आधार वर्ष से 47% की बढ़ोतरी हुई है। तथापि, चूंकि

आंकड़े एक ही संयंत्र में उत्पादित दो उत्पादों से संबंधित हैं, इसलिए क्षति विश्लेषण के लिए इन मानदंडों पर विचार नहीं किया जा रहा है।

उत्पादकता, रोजगार एवं मजदूरी

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
उत्पादन*	***	***	***	***	***
कर्मचारी (सं.)	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	91	92	97
इकाई उत्पादकता	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	97	142	182	151
मजदूरी (लाख रु.)	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	153	37	37	27

* इसमें नोनाइल फिलाइल एवं डोडेसिल फिलाइल शामिल है जिन्हें एक ही संयंत्र में उत्पादित किया जाता है।

स्रोत: घरेलू उद्योग

40. प्राधिकारी ने नोट किया है कि क्षति अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष की तुलना में कमी आयी है। तथापि, प्रति कर्मचारी उत्पादकता में इसकी पूर्ववर्ती अवधि में 82% के शीर्ष पर पहुंचने के बाद वर्ष 2001-02 से 51% की वृद्धि हुई है।

यहां क्षति का कोई साक्ष्य नहीं है। मजदूरी में आधार वर्ष में हुई 73% की वृद्धि को घरेलू उद्योग द्वारा चिंता का कारण नहीं माना गया है जबकि वर्ष 2002-03 से इसमें 116% की कमी इसलिए हुई थी क्योंकि उस समय संबद्ध उत्पाद का दो संयंत्रों में और बाद के वर्षों में केवल एक संयंत्र में उत्पादन किया जा रहा था।

लाभप्रदता

लाख रु. में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री मूल्य	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	86	87	103	88
बिक्री लागत	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	82	74	89	86
लाभ/हानि	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	183	526	580	16
लाभ/हानि पीएमटी	***	***	***	***	***
पी/एल%	-2.47	2.49	14.22	13.22	-0.45

स्रोत: घरेलू उद्योग

41. आधार वर्ष 2001-02 के दौरान घरेलू उद्योग को *** लाख रु. का घाटा हुआ था। उसके पश्चात् क्षमता उपयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। लाभप्रदता में वर्ष 2001-02 में *** लाख रु. के घाटे से वर्ष 2004-05 में *** लाख रु. के लाभ तक पांच गुणा वृद्धि हुई है और तब पीओआई में अचानक इसमें *** लाख रु. का घाटा हुआ है। यह वर्ष 2004-05 की तुलना में उत्पादन लागत में

जांच अवधि के दौरान 17% की अत्यधिक वृद्धि के कारण था लेकिन उद्योग इस अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में केवल 2.7% की सीमा तक ही वृद्धि कर सका था। तथापि, प्राधिकारी वर्ष 2003-04 और 2004-05 में कीमत और लागत के बीच मार्जिन को नोट करते हैं और इसी के साथ घरेलू बाजार में उत्पाद की घटी हुई उपलब्धता के कारण उपभोक्ताओं को वर्ष 2003-04 से संबद्ध वस्तुओं का अधिक आयात करना पड़ा।

निवेश पर आय एवं नकदी प्रवाह

लाख रु. में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
लगाई गई पूंजी	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	92	62	75	67

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
ब्याज पूर्व लाभ	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	139	140	24
नकद प्रवाह	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	1102	3026	3238	139
आरओसीई	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	110	225	187	45

स्रोत: घरेलू उद्योग

42. लगाई गई पूंजी पर आय (आरओसीई) वर्ष 2003-04 में ***% के उच्च स्तर पर पहुंच गई और पीओआई में ***% की गिरावट आयी। पीओआई में नकदी प्रवाह में 2004-05 की तुलना में मालसूचियां

तीव्र गिरावट आयी परन्तु यह तब भी आधार वर्ष में नकदी प्रवाह से अधिक था। ब्याज पूर्व लाभ में भी पीओआई में वर्ष 2004-05 की तुलना में तीव्र गिरावट आयी थी।

मी. टन में	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
औसत मालसूची (सूचीबद्ध)	100	110	185	205	141
बिक्रियां	***	***	***	***	***
बिक्रियों का % (सूचीबद्ध)	100	122	252	272	226

स्रोत: घरेलू उद्योग, गणनाएं

43. घरेलू बिक्रियों के प्रतिशत के रूप में औसत मालसूचियां भी आधार वर्ष की तुलना में दोगुनी से अधिक हो गई हैं। बिक्रियों के प्रतिशत के रूप में औसत मालसूची में वर्ष 2004-05 की तुलना में पीओआई में गिरावट आयी है हालांकि यह आधार वर्ष से अधिक थी।

पाटन की मात्रा

44. जिस सीमा तक पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है उस सीमा के सूचक के रूप में पाटन की मात्रा से पता चलता है कि पीओआई के दौरान संबद्ध देश के विरुद्ध निर्धारित पाटन माजिन बहुत अधिक है।

कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

45. जिन कारकों से घरेलू बाजार की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं, उन कारकों का विश्लेषण करने के लिए लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा और प्रतिभागी प्रतिस्थापनों की कीमतों में परिवर्तन की जांच की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का कोई अन्य घरेलू उत्पादक नहीं है। संबद्ध देशों से पाटित आयातों को घरेलू उत्पाद के साथ प्रतिस्पर्धा करते और घरेलू बाजार में कीमतों को प्रभावित करते हुए पंजा गया है।

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से कीमत कटौती का स्तर केवल 2-7% है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में पीओआई के दौरान आधार वर्ष की तुलना में बढ़ोत्तरी हुई है लेकिन यह बढ़ोत्तरी पीओआई में लागतों में वृद्धि से कम है जिससे संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण कम रही हैं।

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा नोनाइल फिनोल का उत्पादन रसाल संयंत्र और फिनोल का उत्पादन नवी

मुम्बई संयंत्र में किया जाता है। संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए कच्ची समग्रियां फिनोल एवं नोनेन हैं। यद्यपि नोनेन का पूर्ण रूप से आयात किया गया है, फिनोन संबंधी अपेक्षाओं को लगभग 74% की सीमा तक आंशिक रूप से आयातों के जरिए और आंशिक रूप से नवी मुम्बई संयंत्र से अन्तरण के जरिए पूरा किया गया है। यह अन्तरण बाजार कीमत अर्थात् नवी मुम्बई संयंत्र की बिक्री कीमत पर किया गया है। इसके अलावा, नोनाइल फिनोल की क्षतिरहित कीमत निर्धारित करने के लिए रसाल संयंत्र के लागत संबंधी आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जबकि नवी मुम्बई संयंत्र में उत्पादित फिनोल के लिए उस संयंत्र के लागत संबंधी आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा। अतः आयातक द्वारा आशंकित दोहरे उपचार का संवाल बेबुनियाद है। वृद्धि

48. प्राधिकारी यह पाते हैं कि पीओआई के दौरान देश में मांग में आधार वर्ष 2001-02 की तुलना में लगभग ***% गिरावट आयी है जबकि घरेलू उत्पादकों का बाजार हिस्सा इसी अवधि के दौरान ***% से भी अधिक कम हुआ है। अतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के संबंध में बढ़ोत्तरी पीओआई के दौरान नकारात्मक है। यह भी नोट किया जाता है कि बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग और लाभप्रदता के संबंध में बढ़ोत्तरी भी जांच अवधि के दौरान नकारात्मक रही है।

च. 8 क्षति संबंधी निष्कर्ष

49. घरेलू उद्योग की स्थितियों की जांच के आधार पर प्राधिकारी का मानना है कि

क. संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और भारत में कुल मांग और घरेलू उत्पादन की तुलना में वृद्धि हुई है;

ख. याचिकाकर्ता का बाजार हिस्सा कम हुआ है जबकि आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है;

- ग. लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह में पीओआई में तीव्र गिरावट आयी है;
- घ. घरेलू उद्योग के लिए आरओसीई यद्यपि यह अब भी सकारात्मक है, में तीव्र गिरावट आयी है और इससे पूंजी निवेश जुटाने की उनकी क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है;
- ङ. घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग और उत्पादन में पीओआई के दौरान गिरावट आयी है;
- च. घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में कमी हुई है;
- छ. कीमत कटौती हुई है और कम कीमत पर बिक्री बहुत अधिक है;
- ज. संबद्ध देश से पाटन मार्जिन बहुत अधिक है।

अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जैसा कि नियमों के अंतर्गत परिकल्पना की गई है।

छ. कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

छ.1. हितबद्ध पक्षकारों के विचार

50. हितबद्ध पक्षकारों ने टिप्पणी की है कि डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.5 में यह माना जाता है कि पाटित आयातों और घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन एक ऐसी अपेक्षा है जिसे प्राधिकारी के समक्ष सभी संगत तथ्यों की जांच के आधार पर पूरा किया जाना था। अतः प्राधिकारी को चीनी ताइपेई जो भारतीय बाजार के एक महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी के रूप में योगदान दे रहा है, से इतर अन्य देशों से आयातों द्वारा हुई क्षति को ध्यान में रखना चाहिए ताकि यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि क्षति का इनसे संबंध नहीं था और इसलिए चीनी ताइपेई से आयातों के साथ कोई कारणात्मक संबंध होना नहीं माना जा सकता है।

51. उन्होंने तर्क दिया है कि सभी देशों की भारत औसत कीमतें संबद्ध देश से आयातों की तुलना में समान स्तर पर थीं। इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा लगाए गए आरोप के विपरीत कीमतों से नोनाइल फिनोला आपूर्तिकर्ता हेतु उपभोक्ता की पसन्द निर्धारित नहीं होती है।

52. उन्होंने दावा किया है कि सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध सूचना यह दर्शाती है कि कम्पनी द्वारा फेनॉल और एसीटोन का विपणन किया जा रहा था, जिसके बावजूद भारत एक निवल आयातक था। इसके अतिरिक्त, कम्पनी द्वारा जानबूझ कर नोनाइल फेनॉल के निर्यातों को बढ़ाया जा रहा था, इसलिए कम्पनी द्वारा बाजार हिस्सा गंवाए जाने के बिना दावों की बारीकी से संवीक्षा की जानी है। इसके अतिरिक्त, कम्पनी द्वारा संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए आबद्ध रूप से फेनॉल की बड़ी मात्रा में खपत की जाती है।

53. हितबद्ध पक्षकारों ने आरोप लगाया है कि आवेदक जाँच अवधि के दौरान हर्डिलिया इन्वेस्टमेंट्स लि., सहायक कम्पनी के एकीकरण में शामिल था, क्षति रहित कीमत का निर्धारण किए जाने से पूर्व निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इसके प्रभावों और गैर-आरोप तथ्यों के संबंध में संबद्ध उत्पाद पर उसके प्रभाव को सुनिश्चित एवं उसका विश्लेषण किया जाना है।

54. पक्षकारों ने आवेदक की लाभप्रदता में गिरावट के आरोप के संबंध में भी असली तथ्य प्रस्तुत किए हैं। केवल दो वर्षों की अवधि में सूचीबद्ध लाभप्रदता के 731.5 से घटकर (-) 102.8 हो जाने का दावा किया गया था। यद्यपि उसे सूचीबद्ध करके गोपनीय

रखा गया था, तथापि सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध सूचना कम्पनी की वास्तविक लाभप्रदता का निर्धारण करने के लिए पर्याप्त थी। घरेलू उद्योग ने वर्ष 2003-04 के लिए मूल्य-हास के पूर्व 3343 लाख रुपए का दावा किया जिसे याचिका में 425.7 (सूचीबद्ध) के रूप में प्रकट किया गया था। यदि ये आँकड़े सही हैं तो घरेलू उद्योग की परिकल्पित लाभप्रदता निम्नानुसार होगी :-

वर्ष	लाभप्रदता (सूचीबद्ध)	लाभप्रदता (लाख रु. में)
2001-02	100	785
2002-03	83.1	652
2003-04	425.7	3343
2004-05	731.9	5740
2005-06	(102.8)	(807)

55. हितबद्ध पक्षकार मानते हैं कि चूंकि घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कम्पनी है और उसका तुलन-पत्र समेकित था इसलिए यह पता लगाना आवश्यक था कि विभिन्न उत्पादों (फेनॉल), एसीटोन, नोनाइल फेनॉल) और आबद्ध रूप से उत्पादित कच्ची सामग्रियों (फेनॉल) के बीच परिवर्तनीय एवं नियत लागतों का विभाजन किस प्रकार किया गया है।

56. उनका यह भी कहना है कि "अन्य कारक" जिन्हें घरेलू उद्योग की स्थिति और उसके कीमत संबंधी उतार-चढ़ाव को प्रभावित करता हुआ माना जाना चाहिए, अंतर्राष्ट्रीय बाजार की स्थिति और भारत में उदारीकरण की प्रक्रिया थी। यदि घरेलू उद्योग की निर्यात कीमतों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत में उतार-चढ़ाव का प्रतिनिधि माना जाए तो घरेलू कीमतों में वृद्धि के बजाय गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होनी चाहिए (जैसा कि उसकी निर्यात कीमतों के मामले में है) और भारतीय बाजार में गिरावट और भी अधिक होनी चाहिए क्योंकि पिछले वर्षों में नोनाइल फेनॉल पर आयात शुल्कों को कम किया गया है। यदि घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आई भी है तो ऐसे उतार-चढ़ाव का कारण कथित रूप से पाटित आयातों को नहीं माना जा सकता है। अतः, वर्तमान मामले में कारणात्मक संबंध की अपेक्षा को पूरा नहीं किया गया है।

57. उन्होंने दावा किया है कि आवेदक को हुई क्षति स्वयं के कारण थी :-

- ❖ क्षति का दावा करते समय आवेदक को निर्यात बाजार (चीन) में पाटन करता हुआ पाया गया।
- ❖ कि इकाई को निर्धारित व्ययों की अदायगी करके उत्पादन लागत को इष्टतम बनाने के लिए उत्पादन बढ़ाना था, यह एक भ्रामक तर्क था क्योंकि संयंत्र का आकार घरेलू माँग का तीन गुना था। उपभोक्ता/औद्योगिक प्रयोक्ता से आवेदक द्वारा लगाए गए वृद्धिपूर्ण अनुमानों की भरपाई करने को नहीं कहा जा सकता है। घरेलू उद्योग को हुई क्षति कुछ हद तक उनकी बेसी क्षमता के कारण हुई है।
- ❖ यद्यपि घरेलू उद्योग भारतीय माँग की तीन गुना क्षमता वाला एक संयंत्र होने का दावा करता है तथापि उसके बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है। यदि वास्तविक क्षति हुई होती तो याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में

गिरावट नहीं आई होती; इसके विपरीत बड़े पैमाने पर किरायेदारों के आधार पर यह किसी आरोपित पाटन का सामना करने में असमर्थ नहीं होता।

- ❖ आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू कीमतें क्षतिकारक कीमतें हैं और पाटन के कारण उनमें ह्रास हुआ है। यदि ऐसा था तो चीन में पाटन माजिन और अधिक होता। एक तरफ यह दावा करके कि वे निर्यात करने को बाध्य थे और दूसरी ओर निर्यात बाजार में पाटन करके उद्योग ने भारतीय बाजार में अपना एकाधिकार बनाए रखा था। परिणामस्वरूप उन्हें क्षति हुई है और उन्होंने भारत में आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की माँग की है।

58. पक्षकारों का यह भी मत है कि आवेदक देश में एकमात्र विनिर्माता था और वह संबद्ध वस्तु का निवल निर्यातक बनना चाहता था। यद्यपि एकमात्र विनिर्माता होना कोई मुद्दा नहीं था, तथापि विनिर्माता के कार्यकलाप बिना का विषय थे। आयातक अग्रिम भुगतान करने के लिए बाध्य हुए हैं, आपूर्तियों विश्वास-योग्य नहीं हैं और उन्हें अन्यत्र भेज दिया गया है, ऑर्डरों की पुष्टि नहीं की गई है और "गन पाइंट" कीमत निर्धारण का प्रयोग किया गया है जिसके द्वारा क्रेताओं को बहुत कम समय के नोटिस पर कीमत स्वीकार करने को कहा गया है। ऐसे कार्यकलाप जाँच अवधि के पूर्व, उसके दौरान और बाद में भी उपस्थित थे।

छ. 2 घरेलू उद्योग का उत्तर

59. घरेलू उद्योग ने कहा है कि आयातक प्रयोक्ता ने केवल एक वक्तव्य दिया है और उसने ऐसा कोई साक्ष्य नहीं दिया है जिससे यह सुझाव मिलता हो कि पाटन से इतर अन्य कारक हैं जिनसे घरेलू बाजार में आवेदक का निष्पादन प्रभावित हुआ है। चूंकि संबद्ध देशों को छोड़कर अन्य देशों से आयात की मात्रा न्यूनतम से कम थी, अतः उनकी कीमतें संगत नहीं हैं।

60. उद्योग ने दावा किया है कि चूंकि फेनॉल मुक्त रूप से आयात योग्य है, इसलिए उसकी कमी, यदि कोई हो, का संबद्ध वस्तु पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। निर्यातों के बिना संबद्ध वस्तु की कुल लागत में नियत घटक अधिक होते और उनका घरेलू उद्योग पर और भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता। रसायन उद्योग में अधिक क्षमता उपयोग के साथ परिवर्तनशील लागतें कम हो जाती हैं।

61. उद्योग ने उल्लेख किया है कि जाँच अवधि के दौरान किया गया विलय केवल आवेदक की पूर्ण स्वामित्व वाली निवेश कम्पनी के साथ था और उसका संबद्ध उत्पाद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अतिरिक्त, समग्र रूप से कम्पनी के लिए सूचना के आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा लाभप्रदता का विश्लेषण उनकी बहु-उत्पाद प्रकृति को ध्यान में रखते हुए गलत था। फिर भी, विभिन्न उत्पादों के बीच परिवर्तनशील तथा अपरिवर्तनशील लागतों का विभाजन, जिसे प्राधिकारी द्वारा स्थापित किया गया था, डीजीएडी की संगत प्रक्रिया और लागत निर्धारण के मानक सिद्धांतों के अनुरूप है।

62. इस आरोप के विषय में कि क्षति स्वयं के कारण थी, उद्योग का यह मत है कि :--

- ❖ सतत उत्पादन से रासायनिक संयंत्रों में उच्च क्षमता उपयोग और बेहतर प्रसंस्करण कुशलताओं से प्रति

इकाई परिवर्तनशील तथा अपरिवर्तनशील लागतें कम होती हैं (कच्ची सामग्री और क्षमता का उपयोग कम होने के कारण)।

- ❖ विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों में कीमत का निर्धारण उन देशों में माँग-आपूर्ति की स्थिति, उन देशों के पास उपलब्ध क्षमता, बाजार के आकार, मुद्रा, निचले स्तर के उद्योग को अन्य निविष्टियों की आपूर्तियों आदि के द्वारा होता है। निर्यात कीमतें डीजीएफटी की अग्रिम लाइसेंसिंग स्कीम के लिए अनुमत्य कच्ची सामग्री के शुल्क मुक्त लागत-निर्धारण पर आधारित होती हैं। ये कीमतें केवल घरेलू बाजार की कीमतों में प्रदर्शित शुल्कों के कारण घरेलू बाजार में लागतों से अलग होती हैं क्योंकि डब्ल्यूटीओ करार में निर्यात के समय सभी करों के शून्यीकरण की अनुमति दी गई है। इसके अलावा, प्रमुख निर्यात गंतव्य वह देश है जो भौगोलिक रूप से ताइवान के निकट है। घरेलू बाजार में आवेदक को ताइवान से संबद्ध आयातों की पहुँच लागत की बराबरी करनी होती है। ताइवान की सीआईएफ कीमत में उच्च भाड़ा वाले घटक शामिल होते हैं। ताइवान के निकट स्थित देशों को निर्यात के संबंध में भाड़ा बहुत अधिक है। निर्यात बाजारों में बने रहने के लिए गंतव्य देश में नोनाइल फेनॉल के आपूर्तिकर्ताओं के साथ प्रतिस्पर्धा आवश्यक हो जाती है, इन सबसे निर्यात एवं घरेलू कीमतों के बीच अंतर उत्पन्न होता है।

63. इस आरोप के संबंध में कि एक आवेदक एकाधिकार का वाहक है, घरेलू उद्योग ने कहा है कि रसल संयंत्र से संबद्ध वस्तु की आपूर्ति बाढ़ के कारण दो-तीन दिन से अधिक प्रभावित नहीं हुई थी। चूंकि यह एक औद्योगिक कच्ची सामग्री है, इसलिए नोनाइल फेनॉल की आपूर्ति कम्पनी की उत्पादन योजना, जो समय पर ऑर्डर दिए जाने तथा आपूर्ति को अन्यत्र न भेज दिए जाने सहित अनेक कारकों पर निर्भर करती है, के अनुसार की जाती है। इसके अतिरिक्त घरेलू तथा विदेशी उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा के परिदृश्य में कोई एकाधिकार स्थापित नहीं रह सकता है। एकाधिकार रखने वाला कीमत निर्धारक होता है, न कि कीमत स्वीकारकर्ता। इसके बावजूद कानून के ऐसे किसी प्रावधान का संदर्भ नहीं दिया गया है जिससे यह संकेत मिलता हो कि एकाधिकार-प्राप्त उत्पादक की सिद्ध क्षतिकारक पाटित आयातों से रक्षा नहीं की जा सकती है। जहाँ तक अग्रिम भुगतानों का संबंध है, आवेदक द्वारा क्रेता की ऋण पात्रता के अनुसार 120 दिन तक के ऋण पर भारत में संबद्ध वस्तु की बिक्री की जा रही है। अग्रिम भुगतान केवल उन्हीं मामलों में अपेक्षित होता है जब कभी-कभी क्रय करने वाले उपभोक्ताओं द्वारा विलम्ब से या टेढ़े भुगतान की संभावना हो या विशेष कीमत दिए जाने पर आयातकों की ओर से अग्रिम भुगतान की पेशकश की गई हो। आयातक ने ऋण पर संबद्ध वस्तु का क्रय भी किया है और कभी-कभी देय तिथि से विलम्ब से भुगतान किया है। गनपाइंट पर कीमत निर्धारण के आरोप के संबंध में, विशेष रूप से रसायनों और मध्यवर्तियों के लिए वाणिज्यिक सौदों में कीमत पेशकश के लिए "सीमित वैधता" प्रदान करने की प्रथा है, ये अवधियाँ उप उत्पादों के लिए और भी कम होती हैं।

जिनकी कच्ची सामग्री की कीमतें परिवर्तनशील हैं। चूँकि आयातक और आवेदक के बीच के पत्राचार को गोपनीयता का दावा करने के लिए किसी कानूनी या तर्कसंगत आधार के बिना गोपनीय रखा गया है, इसलिए प्राधिकारी को आवेदक को उन ई-मेलों की प्रति उपलब्ध करानी होगी या आवेदक को प्रति की अनुपस्थिति में ऐसी मेलों/अन्य दस्तावेजों के रिकार्ड को अस्वीकार करना होगा।

छ. 3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

(i) अन्य आयातों का प्रभाव

64. वर्ष 2001-2002 और जाँच अवधि के दौरान कुल आयातों के अनुपात में संबद्ध देशों से पाटित आयातों में 95% से 99% तक की पर्याप्त वृद्धि हुई। घरेलू उत्पादक का बाजार हिस्सा वर्ष 2001-2002 में ***% से घटकर जाँच अवधि के दौरान ***% रह गया, जबकि उसी अवधि के दौरान घरेलू माँग में तुलनात्मक रूप से कम, केवल ***% की गिरावट आई। यह पाया गया है कि कुल आयातों और बाजार में माँग के अनुपात में अन्य स्रोतों से आयात नगण्य हैं जो क्षति जाँच अवधि के शुरू के वर्षों में 5% और बाद के वर्षों में 0.5% से कम रहे हैं। अतः, ऐसे आयातों का घरेलू उद्योग पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है।

65. कीमत प्रभाव की यह जाँच करते समय कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है, प्राधिकारी ने पाया कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का पहुँच मूल्य केवल जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था। कीमत कटौती 2% से 7% थी। तथापि जाँच अवधि को छोड़कर जब पाटित आयातों के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत नहीं बढ़ा सकी, घरेलू कीमतों का अवमूल्यन नहीं हुआ है। परिणामतः जाँच अवधि के दौरान उद्योग की लाभप्रदता का क्षरण होने से उसे वित्तीय घाटा हुआ और संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण उने वास्तविक क्षति हुई है।

(ii) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा तथा विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

66. आयातक(कों) के अग्रिम भुगतान, आपूर्तियों की अविश्वसनीयता एवं उन्हें अन्यत्र भेजे जाने, ऑर्डरों की पुष्टि का अभाव तथा बहुत कम नोटिस पर क्रेताओं से कीमत स्वीकार करने की माँग करते हुए "गन पॉइंट" पर कीमत निर्धारण का प्रयोग संबंधी आरोपों का आवेदक द्वारा यह कह कर खण्डन किया गया है कि यह मुख्य मुद्दों से प्राधिकारी के ध्यान को विचलित करने का एक तरीका है। तथापि, आयातक ने यह साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि बाद, कच्ची सामग्री के आयातों की विलम्बित प्राप्ति, संयंत्र क्षमता के अन्याय उपयोग जैसे कारणों से संबद्ध उत्पाद की आपूर्तियाँ प्रभावित हुई हैं।

(iii) माँग में कमी अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

67. यह नोट किया गया है कि जाँच अवधि के दौरान समग्र माँग में कमी हुई है जो विशेष रूप से क्षति जाँच अवधि के पहले भाग में अधिक थी। जाँच अवधि में भी घरेलू माँग आधार वर्ष 2001-2002 में विद्यमान माँग के स्तर तक नहीं पहुँच सकी।

(iv) प्रौद्योगिकी

68. घरेलू उद्योग तथा संबद्ध देश के निर्यातकों द्वारा अपनाई जा रही प्रौद्योगिकी में अंतर, यदि कोई हो, से घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित नहीं हुआ है।

(v) निर्यात निष्पादन

69. घरेलू उद्योग ने जाँच अवधि और उसके पूर्व के वर्षों में भी संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। तथापि, क्षति जाँच के प्रयोजनार्थ घरेलू एवं निर्यात एवं निर्यात बिक्रियों को अलग-अलग किया गया है और निर्यातों के कारण हुई क्षति का कारण घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग के निष्पादन को नहीं माना गया है। परंतु प्राधिकारी ने पाया है कि वर्ष 2001-02 की तुलना में जाँच अवधि के दौरान निर्यात बिक्रियों में 3000% तक की अत्यधिक वृद्धि हुई और पूर्व की अवधि में यह उससे भी अधिक थी। निर्यात में वृद्धि 2003-2004 में शुरू हुई और वर्ष 2004-05 में यह दोगुनी हो गई। इसके साथ-साथ आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2003-04 में आयात में लगभग 700% और वर्ष 2004-05 में 1200% की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग के निर्यात तथा देश में आयात अंतर्ग्रस्त रूप से एक-दूसरे से संबंधित हैं। चूँकि पिछली अवधियों में 100% की तुलना में वर्ष 2003-04 में केवल 86% घरेलू माँग पूरी हुई थी, अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अपूर्ण घरेलू माँग के कारण आयातों में वृद्धि हुई और न कि आयातों से घरेलू उद्योग के हाशिए पर आने के कारण निर्यातों में वृद्धि हुई।

70. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि आवेदक के पास भारी अप्रयुक्त क्षमता उपलब्ध थी और केवल पाटित आयातों की उपस्थिति से घरेलू बाजार में उसकी बिक्री प्रभावित हुई थी। इसके अलावा, यह कि घरेलू और निर्यात, दोनों बाजार उक्त बाजार में प्रचलित कीमतों से प्रभावित होते हैं और एक बाजार में मात्रा में गिरावट के परिणामस्वरूप दूसरे बाजार में गिरावट तथा विलोमतः नहीं आती है। आवेदक घरेलू बाजार में अधिक बिक्री कर सकता था यदि उसने उचित कीमत प्राप्त की होती और यदि उसने घरेलू बाजार में अपनी मात्रा बढ़ाने के लिए वर्तमान कीमतों अथवा कम कीमतों पर वर्तमान से अधिक कोई बिक्री की होती तो आवेदक के घाटे में ही वृद्धि हुई होती और उस पर और ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव पड़ा होता। तथापि प्राधिकारी के विश्लेषण से यह पता चला कि जाँच अवधि को छोड़कर क्षति अवधि में उत्पादन एवं कुल बिक्री, दोनों में वृद्धि हुई है। यद्यपि घरेलू बिक्री में 2004-2005 के दौरान मामूली वृद्धि को छोड़कर क्षति अवधि में गिरावट की प्रवृत्ति दर्ज हुई है तथापि जाँच अवधि को छोड़कर निर्यात में वृद्धि दिखाई दी है। निर्यात बिक्री में उत्पादन की तुलना में वृद्धि (जाँच अवधि को छोड़कर) हुई है जिससे घरेलू बाजार के लिए संबद्ध उत्पाद की उपलब्धता कम हो गई है।

(vi) उत्पादकता

71. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ, अतः उत्पादकता स्वतः घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती है।

ज. क्षति मार्जिन की मात्रा

72. प्राधिकारी ने क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से वस्तुओं के पहुँच मूल्य के निर्धारण के लिए डीजीसीआईएस के आयात कीमत के ऑफ़सेटों को अंगीकार किया है। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना इस प्रकार निर्धारित पहुँच मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से निर्यातों का भारित औसत क्षति मार्जिन निम्नानुसार परिकलित किया गया है:-

क्षति मार्जिन का परिकलन

देश का नाम	क्षति मार्जिन (आई एम)	क्षति मार्जिन %
चीनी ताइपेई	***	7-12%

झ. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

73. हितबद्ध पक्षकारों ने हरिदास एक्सपोर्ट्स बनाम ऑल फ्लोर ग्लास मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन, 2002 के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा सार्वजनिक हित के विचार का उदाहरण दिया है जिसमें उसने माना है कि "भारत में विद्यमान कीमतों से कम कीमत पर सामग्री के आयात को स्वतः ही सार्वजनिक हित के प्रति पूर्वाग्रह-युक्त नहीं माना जा सकता है" और ये कहा है कि शुल्क लगाने के पूर्व निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा न्यायसंगत रूप से कार्य करते हुए और उपभोक्ता के हितों की रक्षा करते हुए प्रयोक्ता उद्योग की स्थिति पर विचार किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है वह विशिष्ट निर्णय एमआरटीपी अधिनियम और न कि पाटनरोधी कानूनों जिन्हें विशेष रूप से पाटन के क्षतिकारक प्रभावों से घरेलू उद्योग की रक्षा हेतु तैयार किया गया था, के संदर्भ में दिया गया था। इसके अतिरिक्त, आयातक यह दर्शाने में असमर्थ रहा है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से किस प्रकार सार्वजनिक हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और वह मुद्दों तथा प्राधिकारी को प्रमित करने का प्रयास कर रहा था।

74. प्राधिकारी मानते हैं कि आमतौर पर पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः बहाल की जा सके। यद्यपि शुल्क के अधिरोपण से संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके विनिर्मित उत्पादों का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है और उनकी संबंधित प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है, तथापि इन उपायों से बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन की प्रथाओं से प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त हो जाएगा और उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु के अधिक विकल्प की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी।

ज. निष्कर्ष

75. उपर्युक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि:-

क्र. सं.	उप शीर्ष टैरिफ मद	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की ईकाई	मुद्रा
1.	2907.13	नोनाइल फेनॉल	चीनी ताइपेई	चीनी ताइपेई को छोड़कर कोई अन्य देश	कोई	कोई	163.62	मी. टन	अम.डा.
2.	वही	वही	चीनी ताइपेई को छोड़कर कोई अन्य देश	चीनी ताइपेई	कोई	कोई	163.62	मी. टन	अम. डा.

ठ. आगे की प्रक्रिया

79. इस सिफारिश के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

80. प्राधिकारी अधिनियम के संगत उपबंधों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार इसमें की

क. संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु का भारत को सामान्य से कम मूल्य पर निर्यात किया गया है।

ख. घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

ग. संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

च. सिफारिशें

76. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच की शुरुआत के संबंध में समस्त हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंधों के पहलुओं के संबंध में सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। स्थापित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति और पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जाँच करने और संबद्ध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन के साथ-साथ ऐसे पाटन आयातों से घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति का निर्धारण करने के बाद प्राधिकारी का मत यह है कि पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए शुल्क का अधिरोपण अपेक्षित है।

77. अतः, प्राधिकारी संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को आवश्यक मानते हुए नीचे दिए गए प्ररूप एवं पद्धति में उसकी सिफारिश करते हैं।

78. कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन में से कमतर के समतुल्य पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त हो सके। तदनुसार, प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित, सीमाशुल्क वर्गीकरण अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के तहत आने वाले नोनाइल फेनॉल के समस्त आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचना जारी किए जाने की तारीख से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क की राशि नीचे तालिका के कॉलम-8 में उल्लिखित राशि होगी।

गई सिफारिशों के अनुरूप निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, परिवर्तन या उसे समाप्त करने की समय-समय पर समीक्षा करेंगे। ऐसी किसी समीक्षा के लिए किसी अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा तब तक विचार नहीं किया जाएगा जब तक कि इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के भीतर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा उसे प्रस्तुत न किया जाए।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRIES**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND
ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 25th June, 2007

Final Findings**Subject : Anti-dumping investigation involving imports
of Nonyl Phenol exported from or originating
in Chinese Taipei.**

No. 14/13/2005-DGAD.—The Government of India having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof :

A. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigation :

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from M/s. Schenectady Herdillia Ltd. (hereinafter referred to as the Applicant) on behalf of domestic industry alleging dumping of nonyl phenol (hereinafter referred to as subject goods) from Chinese Taipei (hereinafter referred to as subject country) and requested for Anti-Dumping investigations and levy of anti-dumping duties on the subject goods.
- (ii) Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were rectified by the applicant;
- (iii) The Authority notified the Taipei Economic and Cultural Centre in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- (iv) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 29th June, 2006 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country in accordance with the Sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.
- (v) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers/users and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the publication

of initiation notification in accordance with the Rule 6(2);

- (vi) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to the following known exporters and the Taipei Economic and Cultural Centres :
 1. China man-made Fibre Corporation
 2. Formosan Union Chemical Corporation.
 No response has been received from the exporters.
- (vii) The Taipei Economic and Cultural Centre in India was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them;
- (viii) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4):
 1. M/s. Micro Inks Limited
 2. M/s. Krishna Antioxidants Pvt. Ltd.
 3. M/s. Laffans Petrochemicals Ltd.
 4. M/s. Esteem Inds. Pvt. Ltd.
 5. M/s. Dai-Ichi Karkaria Limited
 6. M/s. IC India Ltd.
 7. M/s. C.J. Shah & Co.
 8. M/s. Advance Chemicals
 9. M/s. Seterling Auxiliaries Pvt. Ltd.
 10. M/s. Auchtel Products Ltd.
 11. M/s. Chemical Corporation.
 12. M/s. India Glycols Ltd.
 13. M/s. Jubilant Organosys Ltd.
 14. M/s. Gujarat Glycols Pvt. Ltd.
 15. Unitop Chemicals . Pvt. Ltd.
 16. Dorf Ketel Chemicals India Pvt. Ltd.
 17. Indian Chemical Manufacturers Association.
 Response to the questionnaire/notification was initially filed by four importers.
- (ix) Copies of the initiation notification were sent to FICCI, ASSOCHAM, CII, Excise Law Times, etc., for wider circulation.
- (x) Investigation was carried out for the period starting from 1st October, 2004 to 31st December, 2005 (15 months) i.e. the period of investigation (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 2001-02, 2002-03, 2003-04, 2004-05 and the POI.
- (xi) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;

- (xii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7);
- (xiii) A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, wherever requested;
- (xiv) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry;
- (xv) The Authority held a public hearing on 10th April 2007 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, importers of the subject goods from China. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this finding;
- (xvi) ****in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules on merits.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product under consideration in the present petition is Nonyl Phenol, which is also known as para Nonyl Phenol. It is a clear viscous liquid without sediments. The chemical formula and structure of Nonyl Phenol is $C_{15}H_{24}O$. It is used in the manufactures of NP-ethylene oxide condensates for applications as non-ionic surfactants after subsequent sulphonation, of oil soluble phenolic resin, of derivatives applied as corrosion inhibitors in lubricating oils and of ingredients for agro-chemical formulations. It is also used in flame-retardants and plasticizers. The product is classified under sub-heading No. 2907.13 under Customs Tariff Act and Indian Trade Classification. The customs classification is only indicative and does not have any bearing on the scope of investigation. No interested party has contested the description of the product.

C. LIKE ARTICLE

The applicant has claimed that there is no difference in the subject good produced by the domestic industry and the subject product imported from the subject country. The product is being directly imported by the importers and users. The applicant has claimed that the two are technically and commercially substitutable. The Authority noted that no party has disputed this claim that there is no difference between the imported product and the product under consideration manufactured by the petitioner. The imported goods are used by the user industry interchangeably with those produced by the domestic industry. Thus, the products

produced by the domestic industry and imported from the subject country are identical in all essential characteristics and therefore, are like articles within the meaning of the terms under the Rules. For the purpose of the present investigation, the product produced by the applicant is being treated as like article to the product imported from the subject country within the meaning of Rules supra.

D. DOMESTIC INDUSTRY

5. The application has been filed by M/s Schenectady Herdillia Ltd., who is the sole producer of the subject product in India. The Authority noted that the production of the aforesaid producer constitutes 100% of the total domestic production of the domestic like article. The Authority therefore determines that aforesaid applicant satisfy the criteria of standing to file the application on behalf of the domestic industry in terms of Rule 5(3)(a) and represent the domestic industry within the meaning of Rule 2.(b) of the Rules supra. The Authority also noted that there are no arguments from any interested party that the applicant does not meet the criteria of standing as laid down under the Rules.

E. DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

6. Under Section 9A (1) (c) of the Customs Tariff (Amendment) Act, 1995 normal value in relation to an article means:

- “(i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either —
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)”.

E1. Normal Value, Export Price and Dumping Margin

E.1.1 Views of interested parties

7. The interested parties have argued that under the Anti-dumping Rules, the proceeding has to be initiated and conducted on products which are dumped and causing material injury to domestic manufacturers, supported by sufficient evidence of dumping and where applicable, injury and causal link, as mandated under Rule 5(3). But the evidence on calculation of normal value in the Non-

Confidential version was incomplete as (a) the methodology and evidence for constructing the normal value for Chinese Taipei, (b) adjustments in the export price, (c) calculation of dumping margin, (d) information on crucial parameters have not been disclosed. They have submitted that statements made by the petitioner must be supported by actual record and documentation and failure in this connection was fatal as it impaired the objective examination by the Authority of the accuracy or adequacy of the case. Hence, the proceeding should be terminated. Besides a party to an investigation providing confidential information has to also provide meaningful non-confidential summaries or state reasons for non-summarization, as per Rule 7 of the Rules. The petitioner has kept crucial information on calculation of normal value confidential, neither providing meaningful non-confidential summaries nor reasons for the confidential treatment required or why summarization cannot be done. This has significantly hampered the right of industrial users to submit itself in the investigation. Neither criterion for evaluating confidential information - viz., (i) by nature confidential or (ii) provided on a confidential basis conditional on good cause being shown - has been observed contrary to the principles in the Anti-dumping Agreement and Rules.

E.1.2 Response of the domestic industry:

8. The applicant has given all the relevant details regarding the methodology and evidence for computation of normal value. The construction of normal value involves, use of the applicant's costing information, which is confidential by nature, with even the indexed information giving a competitive advantage to others. This information is allowed to be kept as confidential by the Authority. The applicant has given all details regarding the adjustments made to the export price. All information has been given either in actual numbers or indexed.

E.2. Examination by the Authority

9. The Authority has taken cognizance of these submissions to the extent they are relevant and substantiated and the issues raised have been examined in appropriate sections of the findings. The Authority had initiated proceedings only after satisfying itself that *prima facie*, the evidence provided by the applicant was adequate and accurate. It was noted that no exporter from Chinese Taipei has responded to the prescribed questionnaire. The Authority has, thus, determined the Normal Value on the basis of constructed cost of production, taking raw material costs as per the consumption norms of and the duty-free import rates for these incurred by the domestic industry, variable and other costs as per the actuals of the domestic industry towards chemicals, utilities, salaries and wages, stores etc., the selling, general and administrative expenses, depreciation and interest as per the actuals of the domestic industry for exports and profits at 5% of production cost. The Normal Value so constructed is US \$***/MT. The export price has been determined on the basis of CIF import price as per DGCIS data after allowing for adjustments towards freight and insurance etc. based on facts available and port charges and commission at 1% each. Net ex-works export price works out as US \$***/MT. Accordingly, dumping margin for all exporters from Chinese Taipei works

out to US\$ ***/MT (14%).

F. INJURY AND CAUSAL LINK EXAMINATION

F.1 Views of the domestic industry

10. The applicant has claimed that :

- ❖ Volume of imports from Chinese Taipei has increased by 24 times over the injury investigation period.
- ❖ Share of imports from Chinese Taipei as percentage of total imports, total demand and domestic production has increased to 98%, 37% and 24% respectively during the POI.
- ❖ The increase in selling prices has been neutralized by the increase in costs over the injury investigation period. However, the increase in selling prices as compared to the immediately previous year is much lower than in cost over the same period.
- ❖ The dumped imports from Chinese Taipei have significantly undercut and undersold the domestic goods.
- ❖ Volume of domestic sales has declined by 38% over the injury investigation period.
- ❖ Market share of domestic sales has declined to 60% in POI from a level of as high as 98% in the base year.
- ❖ There is negative profitability during the POI. As compared to immediately previous year, the profitability has come down by 12.20%.
- ❖ ROCE and cash profit have come down over the injury investigation period.
- ❖ Average stock (number of days) and also as percentage of sales have increased over the injury investigation period.
- ❖ The margin of dumping in the POI is significant.

F.2 Views of the interested parties

11. The interested parties have argued that the applicant claims to be affected by dumping of all its products during the same or virtually over-lapping periods of investigation - acetone, phenol and the subject product. As phenol is an important input into the product under consideration, the DA should examine the cost of the transfer price of phenol internally and the role the dumped phenol played in the pricing and consequent injury of the subject product.

12. They have submitted that Chinese producers of the subject product initiated anti-dumping investigations against nonyl phenol exported from Taiwan and India during the period 1st July, 2004 to 30th June, 2005, which period overlaps 9 months of the POI in India. The Chinese Authorities have made a final determination on March 28, 2007 and the dumping margin for the applicant was 12.22%, for Formosa Union Chemical Corporation (Taiwan), it was 6.87% and for China Man Made Fibre Corporation (Taiwan), the margin was 4.08%. All other exporters obtained a margin of 20.38%. They have further argued that since none of the exporters have cooperated from the

subject country, the investigating authority can determine the normal value on the basis of "Best Judgement Assessment", as per the judgement of the Supreme Court in the case of *DA vs. Haldor Topsøe* in 2000. Information on the landed value of the subject goods exported to China PR from Taiwan was in the public domain and normal value thus worked out would be the best information available, considering that one of the member countries of the WTO investigated the matter on the same product, same subject country and overlapping POI (9 months). The data could be examined for compliance with the Authority's own standards, and effect can be given to those aspects which will enable an unbiased assessment. Whatever methodology is adopted by the DA, the dumping margin will be lower than claimed by the petitioner.

13. They state that from the balance sheet, it was clear that the applicant was a multi-product company, operating three units in India at Navi Mumbai, Rasal and Lote, but not which plant was for the subject product. As during the POI, the applicant suffered losses due to natural calamities at its locations and claimed loss of profit by way of insurance due to flood in July, 2005, it should prove that it has not benefited from this insurance twice over and are not now claiming compensation for this injury which has already been compensated. Besides, the applicant must demonstrate that the injury being claimed was indeed arising out of the operations of nonyl phenol business and not ancillary operations.

14. They have argued that analysis of the injury data submitted by the applicant show there is no material injury faced by the domestic industry due to dumping as alleged :

- (a) Installed capacity has gone up drastically from 21100 MT in 2001-02 to 24000 MT during 2003-04 and thereafter - an overall increase of over 10%.
- (b) Production has gone up drastically from 13010 MT in 2001-02 to 19102 MT during the annualized POI - an overall increase of 46%.
- (c) While the domestic sales have come down marginally from 7880 MT in 2001-02 to 4929 MT during the annualized POI, the closing stock is also all time low at 204 MT, which means that the domestic industry has higher sales made in the export markets, the details of which has not been disclosed. Thus all the positive indices identified have pushed up the applicant's production.

Accordingly, from the injury analysis carried out, there is sufficient proof that on the crucial and critical parameters of injury, the applicant has not suffered "material injury" as a result of the alleged dumped imports.

15. On the basis of indexed information provided, they have submitted that :

- (i) For 2002-03, the indexed domestic prices fell by more than 15%, while indexed profitability was down by 17% - a case of self-inflicted injury.
- (ii) In 2003-04, while the landed cost of imports increased to 111.6 (indexed), domestic price

remained at the same level 86.56 (indexed) as in the previous year 86.46 (indexed), also impacting profitability to increase by 4.25 times (indexed).

- (iii) In 2004-05 (Apr.-Sept. 04), the landed cost of imports increased to 130.6 (indexed) and domestic price increased to 104 (indexed), and consequently the indexed profitability increased up by 7.31 times (indexed).
- (iv) The price behaviour in the POI, wherein the domestic prices dropped to a level of 88.14 (indexed) which was closely above the domestic price of 2003-04 i.e. 86.56 (indexed). Though the CIF price of imports remained the same as in Apr.-Sept. 04 and Oct. 04-Dec. 05 (Rs. 58.47/kg and Rs. 58.07/kg respectively), the industry has suddenly reported a negative profitability of (-103%) (indexed). The reduction in landed cost of imports is justified on the grounds of reduction of the import duty for the said period.
- (v) During 2003-04 and POI, the indexed domestic price remained more or less the same while profitability which was 425 (indexed) went down to (-82). Further, as reported even after the raw materials of nonene and phenol have risen during the POI, the cost of sales have gone from the 100 (indexed) during 2001-02 to 88 (indexed) during the POI (annualized).

All these factors point that there are certain external factors or that the losses have been passed off on the subject goods being a multi-product company. There is no causal link between alleged dumped imports and injury to the domestic industry.

F.3 Response of the domestic industry

16. The domestic industry has claimed that the other investigations are independent and not linked to the present investigation as the products under consideration are totally different. Besides, the fact that some part of the POI overlaps with each other has no relevance under the anti-dumping provisions. The argument on cost of transfer price of and role of dumped phenol in pricing of nonyl phenol only makes their case stronger as the impact on pricing and costs would be greater once phenol prices go up.

17. The industry has stated that the issue of the applicant itself facing an anti-dumping case in China was of no consequence as the entire anti-dumping investigation was logically and legally concerned only with the "state of the industry" in the domestic market. The Indian exporters have to compete with the same Taiwanese exporters in the Chinese market. That none of the exporters from Taiwan chose to respond to the exporter's questionnaire can be construed as a tacit admission on their part of massive dumping into India, particularly when the same exporters from Taiwan have fully cooperated in the Chinese investigations. In addition, the normal value determined by the Chinese authorities is not available in public domain and is kept confidential, as per accepted practice. Besides, the POI in the China case was Jul 04 - Jun 05, while in this

case, it was Oct 04 - Dec 05. There was no jurisprudence to suggest that the Authority should (without verification) accept the determination made by Authorities of other countries under their own national laws. The normal value determined by the Chinese Authorities (even if available) cannot be relied upon due to significant difference in the POI and consistent fluctuations in the input prices.

18. The industry has stated that the production facility at Rasal (which was for nonyl phenol) was not affected by floods and therefore, was not a beneficiary of insurance claim. The injury information given was with respect to the subject goods in the domestic market only and not for export activity or other products.

19. On the inferences drawn by the interested parties on injury, the domestic industry has stated that capacity was a common facility for nonyl phenol and dodecyl phenol and the available capacity could interchangeably be used for both products without making any changes to the plant. The production figures were for both products and included export production. Hence, any conclusion based on these figures would be inappropriate. Also, as the capacity was for both products, it could not be said to be over-capacitated. The importer had taken the domestic production for subject goods while making the argument of over-capacity, but capacity utilization was 80% during the POI, considering the total production for both products in both markets. If the applicant had a separate dedicated facility for domestic NP, their injury situation would have been worse. As regards stock, the average stock in terms of number days had more than doubled over the POI.

20. On the other conclusions drawn by interested parties, the domestic industry claimed that the importer has made its analysis with profitability, landed value, CIF prices and costs incorrectly taking the sales value (Rs. lacs) - indexed at domestic selling prices. Such analysis would be incorrect and conclusions drawn on misstatements are required to be ignored. There is a decline of as much as 37% in the sales volume of the domestic industry, which is significant, clearly showing injury. Besides, when there is a drastic increase in raw material cost in the POI as compared to the immediately preceding period, no change in the CIF prices indicated that the exporter has suppressed its export prices, which have been undercutting the domestic prices, leading to injury to the domestic industry.

F.4 Examination by the Authority

21. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows :

“Determination of Injury :

- (1) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;
- (2) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to

domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules.”

22. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti- Dumping Rules lay down that:

- a. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.
- b. While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

23. For the purpose of injury and causal link analysis, the dumped imports from the subject countries have been examined to ascertain volume and price effects of these imports on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between dumping and injury, if any. The points made by the interested parties and the response of the applicant have been taken note of, wherever necessary. For the purpose of this examination, the applicant constitutes the domestic industry. The Authority also examined the copy of the anti-dumping proceedings against the applicant in China PR received from the Indian Embassy in Beijing, but it did not contain any details of the Normal Value determined by the Chinese authority.

F.5 Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

24. The effects of the volume of dumped imports from the subject countries, as well as dumped imports from other countries have been examined as follows :

(I) Import Volumes and share of subject countries:

25. For the purpose of injury examination the Authority has examined the DGCIS import data and data from other secondary sources provided by the domestic industry. The Authority noted that there was a slight

variation between the volumes reported in the DGCIS data and the data submitted by the domestic industry for 2004-05 and the POI, as the industry has partly relied on data from IBIS. However, DGCIS import data has been adopted for injury examination. On the basis of this data the import volume of the subject countries are as follows:

Imports of Nonyl Phenol as per DGCIS

Imports	2001-2	2002-3	2003-4	2004-5	POI (unnormalised)
Total					
Qty (MT)	142.43	93.58	975.22	1613.78	2863.74
Value (Rs lacs)	59.33	38.46	488.64	989.56	1718.84
Price/MT	41658	41099	50106	61319	59563
From Chinese Taipei					
Qty (MT)	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44
Value (Rs lacs)	54.61	34.60	483.56	987.05	1712.94
Price/MT	40331	39038	49935	61279	59509
From other countries					
Qty (MT)	7.03	4.96	6.84	3.04	7.30
Value (Rs lacs)	4.72	3.86	5.09	2.51	5.90
Price/MT	67208	77962	74389	82458	80854

26. The Authority observed that the volume of imports from the subject country rose phenomenally by over twenty times compared to the base year, while that from other countries, viz., the Netherlands, Germany, United Kingdom, Poland and Japan, is seen to be negligible. As a cross-check, data on exports from the World Trade Atlas, based on figures furnished by the Taiwan Directorate General of

Customs was also examined. The Authority noted that Chinese Taipei exports the subject product and its isomers to other countries, prominent among these being China, Hong Kong, South Korea and Malaysia. Exports to Japan, Iran and Australia are in smaller volumes. Total exports to India of merely 30 MT in 2001 grew phenomenally to over 4000 MT in 2005 and 2006, accounting for 11-13% of Chinese Taipei's total exports of the product.

Taiwan's exports of Nonyl phenol and its isomers (Jan- Dec.)

Country	2001	2002	2003	2004	2005 (In MT)
China			2185	5786	4566
% share in total exports			8.60	18.67	14.33
Hong Kong	6068	5995	7467	6811	6126
% share	25.28	26.00	29.39	21.98	19.22
India	30	711	1799	2262	4138
% share	0.13	3.08	7.08	7.30	12.98
Japan	2972	2583	919	1772	3043
% share	12.38	11.20	3.62	5.72	9.55
Korea, South	7805	7954	6735	8295	6093
% share	32.52	34.50	26.51	26.77	19.12
Malaysia	274	397	3163	2590	5166
% share	1.14	1.72	12.45	8.36	16.21

Source : World Trade Atlas

27. The Authority recognizes that the two sets of export figures are not strictly comparable, bearing in mind the differential time periods covered by the data sources, WTA covering on calendar year basis, while DGCIS

publishes financial year-wise. Also, there is no explanation of what are the isomers of the product. But the extent of data discrepancy is unmistakable, as seen in the table below.

Product exports as per WTA and imports as per DGCIS

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI
WTA*	30.40	710.63	1798.54	2262.08	4138.14
DGCIS	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44

* For January to December, and inclusive of the isomers of the subject good.

28. Analyzing price movements, the Authority observed that relative to Chinese Taipei's average world price, prices to India were lower, consistently, from 2004. Export price to other countries in 2005 was \$ 41 per kg or over, while for India, the figure was \$ 37.78. Besides, trend analy-

sis of average prices show that between 2001 and 2005, prices to India increased only by 31% while world prices have gone up by 57% during this period. The Authority noted that price movements have not been so low in any other country.

Average price/kg (in Taiwanese dollars)

Country	2001	2002	2003	2004	2005
World prices	26.36	25.66	32.10	41.19	41.44
Indexed	100	97	122	156	157
China			32.43	41.30	40.72
Hong Kong	26.97	26.53	32.60	43.60	40.82
Indexed	100	98	121	162	151
India	28.75	25.71	32.22	38.20	37.78
Indexed	100	89	112	133	131
Japan	25.59	25.28	32.81	44.23	44.17
Indexed	100	99	128	173	173
Korea, South	27.02	25.22	32.05	40.98	41.23
Indexed	100	93	119	152	153
Malaysia	29.53	28.47	31.67	37.96	43.62
Indexed	100	96	107	129	148

Source : World Trade Atlas

29. Notwithstanding the above, in the following analysis, the Authority has relied on data from DGCIS, for the reason that it is available transaction-wise, unlike World Trade Atlas data, which also includes the isomers of the product in total exports.

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI(Ann)
Total imports	142.43	93.58	975.22	1613.78	2885.78
Indexed	100	66	685	1133	2026
Chinese Taipei	135.40	88.63	968.38	1610.74	2878.44
Indexed	100	65	715	1190	2126
Others	7.03	4.96	6.84	3.04	7.34
Indexed	100	70	97	43	104
Domestic demand	***	***	***	***	***
Domestic production	***	***	***	***	***
Percentage share of imports from Chinese Taipei in					
Total imports	95.06	94.71	99.30	99.81	99.75
Dom. Demand (Indexed)	100	72	848	1265	2185
Dom. Prodn (Indexed)	100	59	476	610	1415

Source : DGCIS, domestic industry

30. The Authority noted that imports from the subject country constituted 95% of total imports in 2001-02 and was above 99% after 2003-04, while those from other countries, viz., the European Union countries and Japan, have been declining, being merely 0.25% of the total during the POI. Dumped imports have not only increased in absolute terms but also in relation to total imports, domestic demand and domestic production in India. As a percentage of total demand, dumped imports have risen from ***% in 2001-02 to ***% in the POI, thus cutting into the market share of the domestic industry. Dumped imports have also grown in relation to the domestic production from ***% in 2001-02 to ***% in the POI.

F6 : Price effect of dumped imports

31. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country/

territory has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the weighted average (WA) cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

a. Price undercutting and underselling effects

32. Price undercutting effect of dumped imports from the subject country has been determined by comparing the WA landed value of dumped imports from the subject country over the entire POI with the WANSR of the domestic industry for the same period. For this purpose, landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the CIF value of imports from the subject country.

In Rs/MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI(Annualized)
Landed value	54851	51140	62502	74148	69031
Trend	100	93	114	135	126
Dom. selling price	***	***	***	***	***
Trend	100	95	118	137	141
Price under-cutting	***	***	***	***	***
Under-cutting %	(7-12)%	(5-15)%	(3-8)%	(5-15)%	2-7%

Source : Domestic industry, DGCIS, computations

33. The Authority noted that during the period 2001-02 to 2004-05, there has been negative price under-cutting as the landed price had, all along, been higher than the domestic selling price, even with the progressive reduction in customs duty over the period from 35% to 15%. Besides, the increase in landed price has been 26% compared to the base year price, while the domestic selling price has increased by 41% over the injury period. However, during the POI, there was positive price under-cutting of about 2-7%.

34. Further, it is observed that the cost of sales as well as the selling price (NSR) of the domestic industry shows significant increase compared to the base year. Cost of sales shows an increase of about 38% over the base year and NSR increased by 41%, implying that the increase in costs could be passed on to the consumer over the injury period. The landed value increased by 35% over the base year despite the reduction in customs duty and reduced by 9% during the POI over 2004-05.

In Rs/MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI (Annualized)
Cost of Sales	***	***	***	***	***
Indexed	100	91	101	118	138
Dom. selling price	***	***	***	***	***
Trend	100	95	118	137	141
Landed value	54851	51140	62502	74148	69031
Trend	100	93	114	135	126

Source : Domestic industry, DGCIS

35. In determining the NSR of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have

been excluded. For the purpose of price underselling, the weighted average landed prices of imports from subject country have been compared with the non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI.

In Rs/MT

Non-Injurious Price	***
Landed value	69031
Price Underselling	***
Price Underselling %	7-12%

Source : DGCIS, computations

Price under-selling in the POI is of a higher magnitude than price under-cutting.

b. Price suppression and depression effects of the dumped imports :

36. The price suppression effects of the dumped imports have also been examined. The Authority noted

that the domestic industry could not realize a remunerative price in the POI to recover its full cost, arising perhaps, from a fear of loss of market-share, indicating that the domestic industry has been forced to suppress its prices to retain its market. The cost of sales rose by 20 percentage points and selling price by 4 percentage points in the POI compared to 2004-05.

F.7 Impact of dumped imports on domestic industry performance parameters

37. Having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed by the Authority as follows :

Decline in Sales

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI(Annualized)
Domestic sales	***	***	***	***	***
Indexed	100	91	73	75	62
Domestic Demand	***	***	***	***	***
Indexed	100	90	84	94	97
Market share of domestic industry	***	***	***	***	***
Indexed	100	100	87	80	64
Exports	***	***	***	***	***
Trend	100	791	2414	4351	3286

Source : Domestic industry, computations

38. The Authority notes that the share of the domestic industry in total demand declined from ***% in 2001-02 to ***% during the POI registering a decline of 35% while concurrently that of imports from Chinese Taipei rose from ***% to ***% over the same period. The applicant being the only producer and other countries

having a very marginal share in the domestic market, the implication is that the domestic industry has been crowded out by imports from the subject country. Demand has shown a decline till the POI relative to 2001-02, but a recovering trend is evident from 2004-05.

Production and Capacity Utilisation

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI(Annualized)
Capacity*	***	***	***	***	***
Indexed	100	100	114	114	114
Production*	***	***	***	***	***
Indexed	100	98	128	167	147
Capacity Utilization%	***	***	***	***	***
Indexed	100	98	113	147	129

*Incl nonyl phenol & dodecyl phenol, produced in same plant, with capacity interchangeably used.

Source : Domestic industry

39. Capacity was expanded in 2003-04 by 14%, yet capacity utilization has increased by 29% notwithstanding the increase. Production volumes have increased by 47%

since the base year. However as the figures relate to two products produced in the same plant, these parameters are not being considered for injury analysis.

Productivity, employment and wages

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Production*	***	***	***	***	***
Employees (Nos)	***	***	***	***	***
Indexed	100	101	91	92	97
Unit Productivity	***	***	***	***	***
Indexed	100	97	142	182	151
Wages (Rs. Lakhs)	***	***	***	***	***
Indexed	100	153	37	37	27

* Including nonyl phenol and dodecyl phenol, both produced in the same plant.

Source : Domestic Industry

40. The Authority noted that number of employees have reduced over the injury period compared to base year. However, per employee productivity rose by 51% since 2001-02, after peaking at 82% in the previous period. There

is no evidence of injury here. The decline in wages by 73% from the base year is not considered as cause for concern by the domestic industry, while its fall by 116% from 2002-03 was because the subject product was then being produced in two plants and at one plant only in the later years.

Profitability

In Rs. Lakhs	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI (Annualized)
Sales Value	***	***	***	***	***
Indexed	100	86	87	103	88
Cost of Sales	***	***	***	***	***
Indexed	100	82	74	89	86
Profit/Loss	***	***	***	***	***
Indexed	100	183	526	580	16
Profit/Loss PMT	***	***	***	***	***
P/L %	-2.47	2.49	14.22	13.32	-0.45

Source : Domestic Industry

41. During the base year 2001-02, the domestic industry incurred a loss of Rs. *** lakhs. Thereafter, there has been a progressive increase in capacity utilization. Profitability, increased five-fold from a loss of Rs. *** lakhs in 2001-02 to a profit of Rs. *** lakhs in 2004-05, then plummeted to a loss of Rs. *** lakhs in POI. This was because cost of production increased significantly during

the investigation period by about 17% over 2004-05, but the industry could increase the selling prices only to the extent of 2.7% during this period. However, the Authority notes the margin between the price and cost in 2003-04 and 2004-05, which coupled with reduced availability of the product in the domestic market could have led consumers of the subject good to source more of imports from 2003-04.

Return on investment and cash flow

In Rs. Lakhs	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Capital employed	***	***	***	***	***
Indexed	100	92	62	75	67
Profit before interest	***	***	***	***	***
Indexed	100	101	139	140	24
Cash Flow	***	***	***	***	***
Indexed	100	1102	3026	3238	139
R.O.C.E.	***	***	***	***	***
Indexed	100	110	225	187	45

Source : Domestic Industry

42. Return on capital employed (ROCE) reached a high of ***% in 2003-04 and slumped to ***% in the POI. Cash flow deteriorated very sharply in the POI over

2004-05 but was still higher than in the base year. Profits before interest also declined steeply in the POI relative to 2004-05.

Inventories

In MT	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Av. Inventory (Index)	100	110	185	205	141
Sales	***	***	***	***	***
% to Sales (Indexed)	100	122	252	272	226

Source : Domestic industry, computations.

43. Average inventories as a percentage of domestic sales have more than doubled over the base year. The average inventory as a percentage of sales have declined during POI over 2004-05 though higher than base year.

Magnitude of Dumping

44. The magnitude of dumping, as an indicator of the extent to which the dumped imports can injure the domestic industry, shows that the dumping margins determined against the subject country during the POI are significant.

Factors affecting prices

45. Change in cost structure, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors that might be affecting the prices in the domestic market. The Authority noted that there was no other domestic producer of the subject goods. Dumped imports from the subject country have been found to be competing with the domestic product and affecting prices in the domestic market.

46. The Authority notes that the level of price undercutting from the subject country is only 2—7%. The selling prices of the domestic industry have increased during the POI as compared to the base year, but this increase is lower than that in costs in the POI indicating that the selling prices of the domestic industry have been suppressed due to dumped imports from the subject country.

47. The Authority observed that the domestic industry produced nonyl phenol at the Rasal plant and phenol at the Navi Mumbai plant. The raw materials for producing the subject goods are phenol and nonene. While the nonene requirement has been imported in full, phenol requirements have been met partly through imports to the extent of about 74% and partly through transfer from the Navi Mumbai plant. This transfer has been priced at the market price, viz., average selling price of the Navi Mumbai plant. Further, for determining non-injurious price for nonyl phenol, the Rasal cost data has been used, while for phenol produced at Navi Mumbai, that plant's cost data would be used. Hence the question of double remedy, as apprehended by the importer, is unfounded.

Growth

48. The Authority finds that the demand in the country has declined by about ***% during the POI as compared to base year 2001-02 whereas the market share of the domestic producers has declined by over ***% over the same period. Thus, the growth with respect to market share of the domestic industry is negative during the POI. It is also noted that the growth with respect to sales volume, capacity utilization and profitability is also negative during period of investigations.

F.8 Conclusion on Injury

49. On the basis of the examination of the conditions of the domestic industry the Authority holds that

- the quantum of imports from the subject country has increased in absolute terms as well as relative to total demand and domestic production in India;
- the market share of the petitioner has decreased while that of imports has increased;
- profitability, return on investment and cash flows have sharply deteriorated in the POI;
- ROCE for the domestic industry, though still positive, has plummeted and could adversely affect their ability to raise capital investment.
- capacity utilization and production of the domestic industry have declined during POI.
- sales volume of the domestic industry has come down;
- There is price undercutting and price underselling is significant;
- The margin of dumping from the subject country is significant.

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury as envisaged under the Rules.

G. CAUSAL LINK AND OTHER FACTORS

GI. Views of the interested parties

50. The interested parties have commented that Article 3.5 of the WTO Agreement holds that the demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry was a requirement to be fulfilled based upon an examination of all relevant facts before the Authorities. Hence, the Authority should take into account the injury caused by imports from countries other than Chinese Taipei contributing as a significant player of the Indian market to conclude that the injury was not related to these and therefore, could not be deemed to have any causal link to imports from Chinese Taipei.

51. They have argued that the weighted average prices of all the countries were in the same band as compared to the imports from the subject country. Therefore, contrary to what has been alleged by the domestic industry, the prices do not determine consumer's choice for the Nonyl Phenol supplier.

52. They have claimed that information in the public domain show that the company was marketing phenol and acetone in spite of which India was a net importer. Further, the company was deliberately increasing its export of nonyl phenol, so that any claims on loss of market share of the same have to be closely scrutinized. Besides, it also consumes huge quantities of phenol captively for producing the subject goods.

53. The interested parties have alleged that the applicant was involved in the amalgamation of Herdillia Investments Limited, a subsidiary company during the POI, the effects of which have to be ascertained and analyzed by the DA prior to fixing the non-injurious price as well as effects on the subject product as regards the non attribution facts.

54. The parties have also debunked the allegation of fall in profitability of the applicant. The indexed profitability was claimed to have fallen to (-) 102.8 from 731.5 all in a span of two years. Although kept confidential by indexing, information in the public domain was adequate to find out the exact profitability of the company. The domestic industry claimed a profit before depreciation at Rs. 3343 lakhs for 2003-04, disclosed in the petition as 425.7 (indexed). If these figures are correct, the profitability of the complainant industry as worked out would be as follows:

Year	Profitability (Indexed)	Profitability (in lakhs)
2001-02	100	785
2002-03	83.1	652
2003-04	425.7	3343
2004-05	731.9	5740
2005-06	(102.8)	(807)

55. The interested parties hold that as the domestic industry was a multi-product company and the balance sheet consolidated, it was necessary to find out how variable and fixed costs have been apportioned among different products (phenol, acetone, nonyl phenol) and captively produced raw materials (phenol).

56. They also state that "other factors" that should be considered affecting the situation of the domestic industry and its price behavior was the situation of the international market and the liberalization process in India. If one considered the export prices of the domestic industry as proxies of price fluctuation in the international market, domestic prices would be expected to show a decrease rather than an increase (as with its export prices) and the decrease should be even more significant in the Indian market, as import duties on nonyl phenol have been reduced over the past years. Even if the domestic industry's prices have decreased, such fluctuation could not be attributed to the allegedly dumped imports. Hence the causal link requirement was not satisfied in the present case.

57. They claim that the injury to the applicant was self-inflicted:

- While claiming injury, the applicant was found to be dumping in the export market (clin)
- That the unit had to increase production to optimize production cost by defraying fixed expenses was a specious argument, since plant size was thrice the domestic demand. The consumer/industrial user cannot be asked to bear the price of erroneous projections made by the applicant. Part injury to the domestic industry has been caused by their overcapacity.
- Even though the domestic industry claims to have a plant three times the capacity of the Indian demand, it has yet apparently drastically receded market share. If there has been actual injury, the petitioner would not have a receding market share; on the contrary, based on the economies of scale, it would not have been able to compete with any alleged dumping.
- The applicant claims that the domestic prices are injurious prices and are suppressed on account of dumping. If this was so, the dumping margin in China would have been much higher. The industry was perpetuating their monopolies in the Indian market, claiming on the one hand that they are compelled to export; while on the other, they are dumping in the export market. Consequently, they are injured and seek to have anti-dumping duty imposed on imports into India.

58. The parties have further held that the applicant was the only manufacturer in the country and wanted to be a net exporter of the subject goods. While being an only manufacturer was not an issue, the conduct of the manufacturer was a cause for concern. Importers have been compelled to pay in advance, supplies are not reliable and are diverted, orders are not confirmed and "gun point" pricing was used whereby the buyer has been asked to accept prices at extremely short notice. Such conduct existed before, during and after the POI.

G. 2 Response of the domestic industry

59. The domestic industry has stated that the importer user has made a mere statement and not provided any evidence to suggest that there are factors other than dumping which have affected the performance of the applicant in the domestic market. As the import volumes from the countries other than subject country were de minimis, their prices are irrelevant.

60. The industry claims that as phenol is freely importable, its deficit, if any, has no effect on the subject goods. Without exports, the fixed component in total cost of the subject goods would have been high and affected the domestic industry more adversely. In a chemical industry, variable costs fall with higher capacity utilization.

61. The industry states that the merger during the POI was merely with the wholly owned investment company of the applicant and has no impact on the subject product. Besides, the analysis of profitability by the interested parties based on the information for the company as whole was incorrect in view of their multi-product nature. Even so, apportionment of variable and fixed costs among different products, which was verified by the Authority, has been as per consistent practice of DGAD and standard principles of costing.

62. Regarding the charge that injury was self-inflicted, the industry holds that :

- Higher capacity utilization and better process efficiencies in chemical plants arising from consistent production lead to lower per unit fixed and variable costs (due to lower raw material and utility consumption).
- Prices in different regions and countries are determined by demand-supply situation in those countries, capacities proximate to these countries, size of the market, currency, supplies of other inputs to downstream industries etc. Export prices are based on duty-free costing of raw material permitted against advance licensing scheme of DGFT. These differ from costs in the domestic market due to the incidence of duties reflected only in domestic market prices, since the WTO Agreement permits

neutralization of all taxes at the time of export. Besides, major export destinations are countries having geographical proximity to Taiwan. In the domestic market, the applicant has to match the landed cost of subject imports from Taiwan. The CIF price from Taiwan includes a high freight component. On exports to countries much closer to Taiwan. The freight incidence is high. Survival in export markets necessitates competing with nonyl phenol suppliers in the countries of destination, all of which contribute to the differential for exports and domestic prices.

63. On the allegation that the applicant is a monopoly operator, the domestic industry state that supplies of subject goods from Rasal plant were not affected except for 2-3 days due to floods. As it is an industrial raw material, nonyl phenol is supplied as per the company production plan which depends on several factors including the timely placement of orders and supplies are not diverted. Besides, in a scenario with competition from domestic and foreign producers, no monopoly can exist. A monopolist would have been a price maker, not a price taker. Despite this, no provision of law indicating that the monopoly producers cannot be protected from proven injurious dumped imports has been pointed out. As for advance payments, the applicant has been selling the subject goods in India on credit of up to 120 days, as per buyers' creditworthiness. Advance payments have been required only when chances of delayed or sticky payments are possible from consumers who buy off and on, or offered by importers if they are given a special price. The importer has also bought the subject goods against credit and on occasions, made payment later than the due date. As regards the charge of gunpoint pricing, in commercial transactions especially for chemicals and intermediates, it is the practice to give 'restricted validity' for the price offer, these periods being shorter for products with raw material prices prone to change. Since the communication between the importer and the applicant has been kept confidential, without any legal or logical basis to claim confidentiality, the Authority has to supply a copy of those e-mails to the applicant or reject record of such mails/other documents without a copy to the applicant.

G. 3 Examination by the Authority

(i) Effect of other imports

64. Between 2001-02 and the POI, the dumped imports from subject countries increased significantly as a proportion of total imports from 95% to 99%. The market share of the domestic producer fell from *** % in 2001-02 to *** % during the POI while demand in the domestic market also declined but less sharply only by ***% during the same period. It is observed that import from other sources is a negligible proportion of the total imports and demand in the market, constituting 5% in the early years of

the injury investigation period and less than 0.5% in the later years. Therefore, such imports do not have any significant impact on the domestic industry.

65. In examining the price effect whether the dumped imports have significantly undercut the price of the like product in India, the Authority found that the landed value of the subject goods from the subject country was lower than the selling price of the domestic industry only in the POI. Price under-cutting is 2% to 7%. Moreover, domestic prices have not been suppressed, except in the POI, when the domestic industry could not increase the selling price as a result of increase in the cost of production due to dumped imports. As a result, the industry incurred financial losses in the POI, which eroded its profitability and thus, suffered material injury due to dumped imports of subject goods during the POI.

(ii) Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

66. The importer(s) allegation of compulsion to pay in advance, unreliability of supplies and their diversion, lack of confirmation of orders and use of "gun point" pricing asking buyers to accept prices at extremely short notice have been refuted by the applicant as a ploy to deviate the Authority's attention from the main issues. However, the importer has submitted evidence that supplies of the subject product have been affected due to reasons such as floods, delayed receipt of raw material imports and interchangeable use of plant capacity.

(iii) Contraction of demand or changes in the pattern of consumption

67. It is noted that there has been contraction in the overall demand during the period under consideration, which was particularly pronounced in the early half of the injury investigation period. Even in the POI, the domestic demand did not recover to attain the level of demand prevailing in the base year, 2001-02.

(iv) Technology

68. Difference in technology being adopted by the domestic industry and the exporters in the subject country, if any, has not been demonstrated to have any adverse effect on the performance of the domestic industry.

(v) Export performance

69. The domestic industry has exported the subject goods during the POI as well as during previous years. However, the profitability of the domestic and exports sales have been segregated for the purpose of the injury examination and injury caused due to exports has not been attributed to the performance of the domestic industry in the domestic market. But the Authority observed that export sales grew explosively by a factor of over 3000% in the POI vis-a-vis 2001-02 and had been even higher in the preceding

period. This export surge began in 2003-04 and doubled in 2004-05. Simultaneously, imports increased by over 700% from the base year in 2003-04 and by 1200% in 2004-05. By implication, the two, viz., domestic industry exports and imports into the country - are correlated. Since in 2003-04, only 86% of the domestic demand was met compared to 100% in previous periods, it seems logical to conclude that imports increased due to the unsatisfied domestic demand, and not that exports increased due to imports edging out the domestic industry.

70. The domestic industry has contended that there was huge unutilized capacity available with the applicant and only the presence of dumped imports affected its sales in the domestic market. Further, that both the domestic and the export markets are governed by the prices prevailing in the respective market and increase in volumes in one market would not result in decline in the other market and *vice versa*. The applicant could have sold more in the domestic market had it got the reasonable price and if it had sold any more than the current sales at current prices or at lower prices to increase its volume in the domestic market, the applicant would have only increased its losses and been affected more adversely. However, the Authority's analysis showed that both production and total sales have grown in the injury period, except in the POI. While domestic sales have registered a declining trend over the injury period except for a brief rise in 2004-05, export sales have depicted a rising trend, except in the POI. The growth in export sales has exceeded that in production (barring in the POI), thereby reducing availability of the subject product for domestic market.

(vi) Productivity

71. The Authority noted that the productivity of the domestic industry improved during the POI, so that productivity *per se* could not be the cause of injury to the domestic industry.

H. MAGNITUDE OF INJURY MARGIN

72. The Authority has adopted the import price data from DGCIS for the determination of landed values of the goods from the subject country for the purpose of determination of injury margin. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value so determined. The weighted average injury margin of the exports from the subject country has been worked out as follows :

Injury Margin Calculations

Name of country	Injury Margin (IM)	IM%
Chinese Taipei	***	7-12%

I. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES

73. The interested parties have cited the Supreme Court's consideration of public interest in the case of

Haridas Exports v/s All Float Glass Manufacturers Association 2002, where it held that "Import of material at prices lower than prevailing in India cannot *per se* be regarded as being prejudicial to the public interest" and has stated that prior to imposing duties, the DA should consider the plight of the user industry by acting equitably and protecting consumer interests. The domestic industry has argued that the particular judgement was delivered in the context of the MRTP Act, not anti-dumping laws, which were framed specifically to protect the domestic industry from the injurious effect of dumping. Further, the importer has been unable to demonstrate how public interest would be adversely affected by the imposition of anti-dumping duties and was attempting to confuse the issues and the Authority.

74. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition. Though duty imposition might affect price levels of products manufactured using the subject goods and influence their relative competitiveness, fair competition in the market would not be reduced by these measures. Imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices and help maintain availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

J. CONCLUSIONS

75. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that :

- a. Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below their normal values.
- b. The domestic industry has suffered material injury.

- c. The injury has been caused to the domestic industry by dumped imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

K. RECOMMENDATIONS

76. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having established positive dumping margin against the subject country, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of duty is required to offset dumping and injury.

77. Therefore, Authority considers it necessary and recommends definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.

78. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends that the anti-dumping duties be imposed from the date of issue of notification by the Central Government, on all imports of nonyl phenol falling under Chapter 29 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from Chinese Taipei. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Column No.8 of the following table.

S. No.	Sub-Heading/ Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amt	Unit of Measure- ment	Currency
1	2907.13	Nonyl phenol	Chinese Taipei	Any country other than Chinese Taipei	Any	Any	163.62	MT	USD
2	-do-	-do-	Any country Other than Chinese Taipei	Chinese Taipei	Any	Any	163.62	MT	USD

L. FURTHER PROCEDURE

79. Any appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

80. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive

measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority